Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ○

(सूरः इब्राहीम : 24)

तर्जुमा: और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल किया जाएगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे अपने रब के आदेश से उनमें सदैव रहेंगे। उनका इनाम उन जन्नतों में सलाम होगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक - 36

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

01 रबी उल् अव्वल , 1446 हिज्री कमरी, 05 तबूक 1403 हिज्री शम्सी, 05 सितम्बर 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अल्लाह तआला की प्रशंसा का महत्त्व

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर काबिल-ए-क़दर और संजीदा काम अगर ख़ुदा तआला की के नाम प्रशंसा के बग़ैर शुरू किया जाए तो वह बेबरकत और नाक़िस रहता है।

(इब्ने माजा अब्वाबुल निकाह बाब खुत्अबा निकाह)

मुस्लमान की विशेषता

हज़रत अब्बू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फ़रमाया कि किसी शख़्स के इस्लाम की ख़ूबी यह है कि वह इस बात को तर्क कर दे जिससे उसका कोई ताल्लुक़ नहीं

(तिरमेज़ी, किताब अल् जुहद, बाब 11 हदीस 2317)

वास्तविक मोमिन

हज़रत अब्बू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मुत्तक़ी बनू, सबसे बड़े आबिद बन जाओगे। क़नाअत इख़्तेयार करो सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बन जाओगे। लोगों के लिए वही चाहो जो अपने लिए चाहते हो हक़ीक़ी मोमिन बन जाओगे। अपने पड़ोसियों से अच्छा सुलूक करो हक़ीक़ी मुस्लमान बन जाओगे। कम हँसो क्योंकि ज़्यादा हँसना दिल को मुर्दा बना देता है

(सुंन इब्ने माजा किताब अल् जुहद बाब रुकु और तकवा)

★ ★ ★

क़ुरआन शरीफ़ में وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ का इरशाद आया है कि मांगने वाले को मत झिड़क अतः याद रखो कि मांगने वाले को न झिड़को, क्योंकि इस से एक प्रकार की बद-अख़्लाक़ी (अनैतिकता) का बीज बोया जाता है, अख़लाक़ यही होते हैं कि मांगने वाले पर जल्दी नाराज़ न हो

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मांगने वाले को झिड़कना नहीं चाहिए

कुछ आदमियों की आदत होती है कि मागने वालों को देखकर चिड़ जाते हैं। और अगर कुछ मौलवियत की रग हो तो उस को बजाय कुछ देने के प्रश्न के मसायल समझाने शुरू कर देते हैं और इस पर अपनी मौलवियत का रोब बिठा कर बाज़-औक़ात सख़्त सुस्त भी कह बैठते हैं। अफ़सोस उन लोगों को अक़्ल नहीं और सोचने का माद्दा नहीं रखते, जो एक नेक दिल और सलीमुल फ़ितरत इन्सान को मिलता है। इतना नहीं सोचते कि सायल अगर बावजूद सेहत के मांगा करता है तो वह ख़ुद गुनाह करता है। उसको कुछ देने में तो गुनाह लाज़िम नहीं आता, बल्कि हदीस शरीफ़ में لَوْ اَتَاكَ رَاكِبًا के शब्द आए हैं। अर्थात चाहे मांगने वाला सवार हो कर भी आए तो भी कुछ दे देना चाहिए और क़ुरआन शरीफ़ में وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ (अल् ज़ोहा : 11) का इरशाद आया है कि सायल को मत झिड़क। इस में यह कोई सराहत नहीं की गई कि अमुक किस्म के सायल को मत झिड़क और अमुक किस्म के सायल को झिड़क। अतः याद रखो कि सायल को न झड़को, क्योंकि इस से एक किस्म की बदअख़्लाकी का बीज बोया जाता है। अख़लाक़ यही चाहता है कि सायल पर जल्दी नाराज़ न हो। यह शैतान की ख़ाहिश है कि वह इस तरीक़ से तुमको नेकी से वंचित रखे और बदी का वारिस बनादे।

एक नेकी से दूसरे नेकी पैदा होती है।

ग़ौर करो कि एक नेकी करने से दूसरी नेकी पैदा होती है और इसी तरह पर एक बदी दूसरी बदी का कारण हो जाती है। जैसे एक चीज़ दूसरी को आकर्षित करती है इसी तरह ख़ुदा तआला ने ये आपस की कशिश का मसला हर चीज़ में रखा हुआ है। अतः जब सायल से नरमी के साथ पेश आएगा और इस तरह पर अख़लाक़ी सदक़ा दे देगा तो क़बज़ दूर हो कर दूसरी नेकी भी करलेगा और इस को कुछ दे भी देगा।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 480 प्रकाशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

शिर्क इन्सान का देखने और सोचने का अंदाज़ बहुत ही सीमित कर देता है और उसकी हिम्मत को गिरा देता है और उसके उद्देश्य को छोटा कर देता है

कोई व्यक्ति किसी क़ब्र पर दिया जला कर रख आए तो चाहे वह साहिब-ए-क़ब्र से दुआ करे या न करे या साहब-क़ब्र को ख़ुदा समझे या न समझे यह कार्य भी शिर्क के अंदर आ जाएगा क्योंकि यह अमल पहले ज़माना के मुशरिकाना आमाल का भाग है

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल् हज आयत नम्बर 32

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ

की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

आठवां : शिर्क की आठवीं क़सम यह है कि किसी ऐसी चीज़ के मुताल्लिक़ जिसे ख़ुदा तआला के कानून-ए-क़ुदरत ने किसी काम के करने की कोई ताक़त नहीं दी, उसके विषय में यह ख़्याल कर लिया जाए कि वह अमुक काम कर लेगी। उदाहरणतः ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में अपने आपको اَلسَّمِيْع क़रार

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जहां जलसा अपनों के लिए तर्बीयत और रूहानियत में तरक़्क़ी का माध्यम बना है वहां ग़ैरों को भी इस्लाम की शिक्षा के समझने और उन्हें ख़ुदा तआला के क़रीब लाने का माध्यम बना है। अतः इसके लिए जहां हमें अल्लाह तआला के आगे मज़ीद झुकना चाहिए, उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए वहां इस अहद पर भी क़ायम रहना चाहिए कि हम हमेशा अल्लाह तआला के पैग़ाम को, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को पहुंचाने के लिए पहले से बढ़कर कोशिश करते रहेंगे

मैं कारकुनान का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्हों ने जलसा से पहले भी, जलसा के दौरान भी और जलसा के बाद भी इन इंतेज़ामात के करने और समेटने में अपना किरदार अदा किया और अभी भी कर रहे हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत के लोगों, महिलाएं, पुरुष, बच्चे उन सबकी यह ऐसी ख़ूबी है जिसकी ग़ैर भी प्रशंसा करते हैं और यह ख़ामोश तब्लीग़ होती है

हर लिहाज़ से हर विभाग जो जलसा सालाना में काम करता है बड़ा फ़आल नज़र आता है और शुक्रिया अधिकारी है

इस वर्ष बर्तानिया के कारकुनान के साथ मारीशस से भी पहली दफ़ा बड़ी संख्या में ख़ुद्दाम और कारकुनान आए और बड़ा अच्छा काम किया। इसी तरह कैनेडा से ख़ुद्दाम आए हैं जो वाइंड अप में मदद कर रहे हैं। अल्लाह तआला इन सबको जज़ा दे

इस जलसा में शामिल हो कर विनीत का ईमान यक़ीन में तबदील हो गया है कि यह सच्ची जमाअत है और यह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जमाअत है। अगर हमने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ पर लब्बैक न कहते हुए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस युग का ईमाम न माना तो हम गुमराह हो जाऐंगे (इस्माईल बेलन, फ़्रैंच गयाना)

दुनिया के सौ से अधिक देशों के लोग एक जगह इकट्ठे हों तो कई चीज़ें मुख़्तलिफ़ नज़र आती हैं, कई मसायल आ सकते हैं परंतु यहां हर एक के अख़लाक़ और व्यवहार एक जैसे नज़र आए (पोशीदा जापान)

मैं आपकी जमाअत के लोगों से वाअदा करता हूँ कि मैं अपना किरदार भरपूर अदा करूँगा और अपने ज़ेरे असर लोगों के सामने अपने ज़ाती तजुर्बात ज़ाहिर करूँगा कि अहमदी न केवल मुस्लमान हैं बल्कि बेहतरीन और मिसाली मुस्लमान हैं (उमर देगोर साहिब, चिल्ली)

अगर दुनिया में हर व्यक्ति इन्सानियत के लिए ज़्यादा शऊर, बेदारी और हमदर्दी पैदा करे जैसे जमाअत कर रही है तो यक़ीनी तौर पर आलमी मसायल हल किए जा सकते हैं (मिसिज़ पेट्रेशा, हॉलैंड)

मैं ने दुनिया के बहुत से देशों में बहुत बड़ी-बड़ी कान्फ्रैंसज़ में शिरकत की है लेकिन इतनी बड़ी कान्फ्रैंस कभी नहीं देखी जिसका इंतेज़ाम रज़ाकार अंजाम दे रहे हों डाक्टर क्रिस्टी चांचिंग साहिबा, ताइवान

हम इस अह्द के साथ इस जलसा से वापस जा रहे हैं कि अपने देश वासियों को बताएं कि जमाअत अहमदिया बहुत पुरअमन और बहुत मु-नज़्ज़म और बाअख़लाक़ जमाअत है (डाक्टर फ्रैंक साहिब, ताइवान)

मुझे बताया गया कि जमाअत अहमदिया दुनिया में क़ियाम अमन, सलामती और इंटर फ़ेथ डायलॉग के लिए काम कर रही है तो मुझे शुरू में यही महसूस हुआ कि यह सब कुछ सिर्फ़ बयानात तक सीमित है लेकिन जलसा में शिरकत करके अपने अनुभव से देखा और तसदीक़ की कि जमाअत जो ग़ैरों को वर्णन देती है ख़ुद इस पर अमल भी करती है (लोरीना वेला साहिबा, कोस्टारीका)

जमाअत के इलम के हुसूल और इलम को फैलाने की काविशों ने मेरे पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है। इस बात ने भी मुझ पर गहरा असर छोड़ा कि तैंतालीस हज़ार अफ़राद की शमूलियत के बावजूद पर्दे का लिहाज़ रखा गया और मर्द और औरतें अपनी-अपनी जगह पर काम कर रहे थे। (सुलेमान बा साहिब, आइसलैंड)

बिल् उमूम मज़हबी तंज़ीमें डिप्लोमैट्स या सियासतदानों को ख़ुसूसी external तक़रीबात के लिए केवल बुलाती हैं और तक़रीब के विशेष भाग में दावत देकर फिर अल्-विदा कर देते हैं लेकिन इस के बरअक्स यह बहुत ग़ैरमामूली और काबिल-ए-तारीफ़ बात है कि आपकी जमाअत ने हम सब ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों से कोई पर्दा नहीं रखा। (बर्तानिया में अर्जनटाइन की सफ़ीर मारीना प्लाज़ा साहिबा)

जलसे में एक रुहानी माहौल महसूस किया जा सकता है और इमाम जमाअत भी जब कुछ बोलते हैं तो श्रोताओं की मुकम्मल ख़ामोशी और तवज्जा हैरानकुन होती थी। एक गहरा रुहानी माहौल क़ायम हो जाता था (रोबर्टो कातालूनौ, इटली)

मैंने भूतकाल में कई मज़हबी प्रोग्रामों में शमूलियत की है लेकिन मैं हमेशा दिल की गहराईयों से जानती थी कि मेरी ज़िंदगी में कुछ रुहानी पहलूओं की कमी है लेकिन जलसा वह तक़रीब थी जिसकी वजह से मेरी ज़िंदगी में जो भी कमी थी वह भी पूरी हो गई।

(अगाथे मेरी साहिबा, रोडरग्ज़ आईलैंड)

जलसे के माहौल को जन्नत से मुशाबहत दी जा सकती है। अगर इतने बड़े मजमा में ऐसा माहौल पैदा किया जा सकता है तो बईद नहीं कि पूरी दुनिया में ऐसा माहौल बनाया जा सके लेकिन केवल जमाअत अहमदिया ही है जो यह काम कर सकती है।

(प्रोफ़ैसर आरबग ज़क्राज कोसो)

मेरे लिए सबसे यादगार लम्हा मर्दों को अल्लाह तआला से दुआ के वक़्त रोते हुए देखना था

(यौरा गोय से ताल्लुक़ रखने वाली महिला लेखिका)

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अंदाज़न छयालीस मिलियन से अधिक लोगों ने जलसा सालाना की ख़बर देखी और सुनी

जलसा सालाना बर्तानिया के अवसर पर बेलौस ख़िदमात बजा लाने वाले कारकुनान के लिए इज़्हार-ए-तशक्कुर तथा जलसा में शामिल होने वाले कुछ ग़ैरों के तास्सुरात

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 अगस्त 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले हफ़्ते जलसा सालाना यू.के अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के नज़्ज़ारे दिखाता हुआ अंत को पहुंचा। यह तीन दिन बड़े बरकतों वाले दिन थे जिसने अपनों और ग़ैरों सब पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ा। कुछ ग़ैरों के तास्सुरात वर्णन करूँगा लेकिन इस से पहले मैं कारकुनान का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्हों ने जलसा से पहले भी, जलसा के दौरान भी और जलसा के बाद भी इन इंतेज़ामात के करने और समेटने में अपना किरदार अदा किया और अभी भी कर रहे हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के लोगों, औरतें, मर्द, बच्चे उन सबकी यह ऐसी ख़ूबी है जिसकी ग़ैर भी प्रशंसा करते हैं और यह ख़ामोश तब्लीग़ होती है।

जो ये कारकुनान अपने फ़रायज़ अदा करते हुए कर रहे होते हैं। जलसा के समस्त विभागों के कारकुनान का इस में अहम हिस्सा है चाहे वे दाख़िली रास्तों पर हैं, गेट पर हैं, चैकिंग पर हैं, पार्किंग में हैं, खाना खिलाने पर हैं, खाना पकाने पर हैं, सफ़ाई पर हैं। बच्चों की डयूटियाँ हैं पानी पिलाने की उस पर हैं या और बच्चे जो मुख़्तलिफ़ जगहों पर डयूटी दे रहे हैं।

हर लिहाज़ से हर शोबा जो जलसा सालाना में काम करता है बड़ा फ़आल नज़र आता है और शुक्रिया का अधिकारी है।

छोटी मोटी कमज़ोरियाँ होती हैं बाज़ों को नज़र भी आती होंगी लेकिन इतने बड़े इंतेज़ाम में ऐसी कमज़ोरियों को देखा अंदेखा किया जाना चाहिए। तथापि यह जो सारी डयूटियाँ हैं वे देने वाले जो हैं वे मेहमानों की ख़िदमत के अतिरिक्त एक ख़ामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं और बहुत से लोग इस बारे में तारीफ़ी कलिमात कारकुनान के लिए कहते हैं, लिख के भेजते हैं, मेहमान भी जो ग़ैर आए हुए होते हैं अपने तास्सुरात में छोड़ के जाते हैं। इसी तरह एम.टी.ए के माध्यम से दुनिया में मुख़्तलिफ़ देशों में बैठे हुए लोग भी शुक्रगुज़ार हैं कि हमें जलसा का प्रोग्राम अहसन रंग में पहुंचाया।

अतः इन सब कारकुनान (सेवा करने वालों) का मैं भी शुक्रिया अदा करता हूँ। इस वर्ष बर्तानिया के कारकुनान के साथ मारीशस से भी पहली दफ़ा बड़ी संख्या में ख़ुद्दाम और कारकुनान आए और बड़ा अच्छा काम किया।

इसी तरह कैनेडा से ख़ुद्दाम आए हैं जो वाइंडअप (wind-up) में मदद कर रहे हैं। अल्लाह तआला इन सबको उत्तम प्रतिफल दे।

प्रैस और मीडीया की कवरेज भी इस वर्ष बहुत अच्छी हुई है। इसी तरह ट्रैफ़िक का इंतेज़ाम भी बहुत अच्छा था। हम-साए भी ख़ुश रहे। हर वर्ष उनकी तरफ़ से शिकायात आती हैं इस साल शिकायात नहीं आएं बल्कि उनके ख़्याल में शायद पिछले वर्ष से हाज़ेरी कम थी जो इतने आराम से ट्रैफ़िक चलती रही हालाँकि हाज़ेरी पिछले वर्ष से दो हज़ार ज़्यादा थी और जब उनको यह बताया गया तो इस बात पर बड़े हैरान थे। मा शा अल्लाह बहुत अच्छा इंतेज़ाम था। इस इलाक़े के हमारे एक कौंसिलर हैं, जो अहमदी हैं, मुरब्बी भी हैं, उन्होंने सब हमसाइयों से ताल्लुक़ात और ट्रैफ़िक प्लैनिंग में बड़ा अच्छा किरदार अदा किया है। अल्लाह तआला उन्हें भी उत्तम प्रतिफल दे।

बहरहाल अब मैं तास्सुरात वर्णन करता हूँ। अल्लाह तआला इन तास्सुरात वर्णन करने वालों के दिलों को भी खोले और वह अहमदियत के पैग़ाम के हक़ीक़ी अर्थों को समझने वाले हों।

और हम इस उद्देश्य को हासिल करने वाले हों जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत का उद्देश्य था। केवल ये तीन दिन ही नहीं बल्कि उन चीज़ों को हम अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा भी बनाएँ।

फ़्रैंच गयाना से इस्माईल बेलन साहिब जो जलसा में शामिल हुए उनका जमाअत से पुराना ताल्लुक़ है लेकिन बैअत नहीं की हुई थी। उनको जलसा के दौरान बैअत की भी तौफ़ीक़ मिल गई। कहते हैं कि मैं ने अपनी ज़िंदगी में इस तरह की तक़रीब जहां दुनिया की समस्त बड़ी ज़बानें और नसलें जमा हों कभी नहीं देखी।

इस जलसा में शामिल हो कर विनीत का ईमान यक़ीन में तबदील हो गया है कि यह सच्ची जमाअत है और यह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जमाअत है। अगर हमने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ पर लब्बैक न कहते हुए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस युग का ईमाम न माना तो हम गुमराह हो जाऐंगे।

कहते हैं कि मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआला ने विनीत को इस रस्ता पर हिदायत दी है और आज अगर मुस्लमान मुत्तहिद होना चाहते हैं तो उनके लिए यही है कि जमाअत अहमदिया में शामिल हो कर ख़िलाफ़त के हाथ पर बैअत कर के इस बाबरकत जमाअत में शामिल हो जाएं। फिर कहते हैं जलसा सालाना के इंतेज़ामात भी लासानी थे। हर कारकुन हमेशा मुस्कुराता हुआ नज़र आया और उनके चेहरों पर कोई मुनाफ़क़त नहीं थी। हर कारकुन दिली ख़ुशी से मेहमानों की ख़िदमत कर रहा था। मैं किसी को नहीं जानता था परंतु हर कोई ऐसे मिल रहा था जैसे हम सालों से एक दूसरे को जानते हैं। कहते हैं जलसा से पहले भी मैं कई सालों से मुस्लमान था, मैं मुस्लमान हो गया था और इस्लामी आदेशों पर अमल करने की कोशिश करता था परंतु हमेशा लगता था किसी चीज़ की कमी है परंतु इस जलसे में शामिल हो कर मुझे महसूस हुआ कि मेरी वह कमी पूरी हो गई है।

जापान से आए हुए बुध मत चीफ़ परेस्टिट योशीदा साहिब कहते हैं हमने जलसा के समस्त सेशंज़ में शिरकत की। मेरी पत्नी महिलाओं की मारकी में भी गई। हमने

नुमाइशें भी देखीं और कुछ देर के लिए बाज़ार की ओर भी गए। हर जगह एक बात मिसाली थी कि ख़िदमत करने वाले रज़ाकार मुस्तइद और चौकस नज़र आते। पहले दिन से लेकर आख़िरी दिन के आख़िरी लमहात तक कारकुनान का जोश-ओ-जज़बा वैसा ही क़ायम-ओ-दायम था। जलसा में शामिल होने वाले अहमदी अहबाब भ ीनिहायत मेहमान नवाज़ और मिलनसार थे।

दुनिया के सौ से अधिक देशों के लोग एक जगह इकट्ठे हों तो कई चीज़ें मुख़्तलिफ़ नज़र आती हैं, कई मसायल आ सकते हैं परंतु यहां हर एक के अख़लाक़ और रवी्ये एक जैसे आए।

जहां किसी को रोक दिया गया वह वहीं रुक गया और जहां नमाज़ के लिए या जलसा के लिए बुलाया गया वहां बिना देरी पहुंच गए। कहते हैं हमारे लिए जलसा का यह नज़ारा नाक़ाबिल फ़रामोश है। उन्होंने मुझ से भी मुलाक़ात की थी और मैं ने उनको कहा था कि एक ख़ुदा पर ईमान ज़रूरी है। इस बारे में सोचें और ग़ौर करें और इसी तरह इन्सानियत से मुहब्बत की तलक़ीन भी की। कहते हैं कि मैं बुध मत क ापैरोकार होने की वजह से रिवायती तौर पर तो एक ख़ुदा को नहीं मानता परंतु मेरा दिल यही कहता है कि इस कायनात का कोई ख़ालिक़ और मालिक है और हम सब उसकी मख़लूक़ हैं और हम इस ख़ालिक़-ओ-मालिक रब का क़ुरब हासिल कर सकते हैं। बहरहाल कुछ न कुछ उनमें अल्लाह तआला की तरफ़ क़दम बढ़ाने का ख़्याल पैदा हुआ।

कोसो से एक मेहमान आए थे अज़ीज़ नज़ीरी (Aziz Neziri) साहिब। कहते हैं पहली बार जलसा में शामिल होने का अवसर मिला। बहुत ख़ुशी हुई। हर चीज़ मुनज़्ज़म तरीक़े पर चल रही थी। विशेषता तक़ारीर बहुत फ़ायदामंद थीं। ख़लीफ़ा वक़्त की तक़रीरें सुनके मैं अपने अंदर एक रुहानी तबदीली पैदा होते देखता हूँ और उनके साथ में वापस जाऊँगा। यहां नमाज़ें पढ़ने से मेरे दिल में एक सुकून पैदा कर दिया है। कहते हैं मैं एक बूढ़ा व्यक्ति हूँ। दुआ है कि अगले वर्ष मुझे फिर उस रुहानी माहौल में शामिल होने का अवसर मिला। कहते हैं इस माहौल ने मेरे अंदर इस्लाम अहमदियत की एक मुहब्बत भर दी है। जहां में जाऊँगा उसका वर्णन ज़रूर करूँगा। लोगों को भी इस तरफ़ तवज्जा दिलाऊँगा कि अहमदियत की हक़ीक़ी तालीम को पढ़ें। ख़लीफ़ा वक़्त के इख़तेतामी ख़िताब का जो दलायल से लबरेज़ था उसका वर्णन भी ज़रूर करूँगा क्योंकि मैं ख़ुद इस बात का शाहिद हूँ। बैअत करने से क़बल बरशतीना नाम का जो शहर है वहां जमाअत का मिशन हाऊस था उसके पास एक दुकान थी। जब कभी इस दुकान में जाता तो वहां दुकान का मालिक जो मुस्लमान था उस को जब पता चलता कि मैं मिशन हाऊस जा कर नमाज़ पढ़ता हूँ तो उसने मुझे कहा कि तुम इस मस्जिद में न जाया करो। ये कादियानी हैं जिन्होंने एक नया नबी बनाया हुआ है। वह व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नऊज़ुबिल्लाह गालियां देता है जो उनका नबी है और इस्लाम में बिदआत पैदा कर दी हैं और इस्लामी तालीम को बदल दिया है। लेकिन मैं नियमित नमाज़ों पर आता रहा और सवालों के उत्तर हासिल करता रहा और अल्लाह तआला ने मेरे दिल को अहमदियत के लिए रोशन कर दिया लेकिन अब इस ख़िताब को सुनने के बाद एक-बार फिर मुझे इस बात का एहसास हुआ कि किस तरह ग़ैर अज़ जमाअत मुख़ालेफ़ीन लोगों को जमाअत से दूर करते हैं। मैं बहरहाल वापस जा कर उन लोगों को इस ख़िताब को सामने रखते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात से ही जवाब दूँगा।

चिल्ली से आने वाले एक मेहमान थे उम्र गैबुर (Gaibur) साहिब जो चिल्ली की नैशनल हुकूमत में डायरेक्टर आफ़ वर्शिप की हैसियत से काम कर रहे हैं, कहते हैं मेरे फ़रायज़ में शामिल है कि चिल्ली की हुकूमत देश में क़ायम समस्त मज़हबी तन्ज़ीमों की रजिस्ट्रेशन और अन्य विषयों में राहनुमाई करूँ। कहते हैं मैंने जमाअत अहमदिया के बारे में मुल्क में क़ायम मुस्लिम तन्ज़ीमों से राय दरयाफ़त की तो सबने मनफ़ी तास्सुरात वर्णन किए जिनका ख़ुलासा यही था कि यह मुस्लमान नहीं हैं। कहते हैं जलसा में आपके ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई। इसके बाद मैं आपकी जमाअत के अफ़राद से वाअदा करता हूँ कि मैं अपना भरपूर किरदार अदा करूँगा और अपने अधीन मेलजोल वाले लोगों के सामने अपने ज़ाती तजुर्बात ज़ाहिर करूँगा कि अहमदी न सिर्फ मुस्लमान हैं बल्कि बेहतरीन और मिसाली मुस्लमान हैं।

कहते हैं मैं आपकी जमाअत को चिल्ली में क़ायम करने के एतबार से भी अपनी भरपूर कोशिश करूँगा। उन्होंने वर्णन किया कि मुझे विशेषता ख़लीफ़ा के पहले दिन का ख़िताब बहुत अच्छा लगा जिसमें उन्होंने डिसिप्लिन और इंतेज़ामी उमूर पर बज़ात-ए-ख़ुद ख़ुतबा दिया। कहते हैं कि मैंने कसरत से मज़हबी जलसों में शिरकत की है लेकिन कभी मैंने यह नहीं देखा कि कोई मज़हबी लीडर ख़ुद इंतेज़ामी उमूर की तरफ़ राहनुमाई करे। मुझे यह ख़ुत्बा सुनकर बहुत हैरत हुई और साथ ख़ुशी भी क्योंकि यह बात बताती है कि आपके ख़लीफ़ा जमाअत की रुहानी और अख़लाक़ी बेहतरी के लिए और इंतेज़ामी बेहतरी के लिए कोशिश कर रहे हैं।

हॉलैंड से एक महिला मिसिज़ पेट्रीशिया (Patricia) कहती हैं।सबसे पहले तो मैं जलसा यू.के 2024 ई. के दौरान आपकी मेहमान-नवाज़ी का शुक्रिया अदा करना चाहूंगी और बहुत सारे लोग, दुनिया के विभिन्न इलाक़ों के लोग आए हुए थे और भाई चारे का एक अजीब इज़हार था। इंडोनेशिया से लेकर अमरीका तक के देशों के लोग थे। कहती हैं मैं आपके इजतेमाआत जैसे (Peace Walk) इत्यादि है, अमन कान्फ्रैंस इत्यादि है उनमें शामिल होती हूँ। अब यह जलसा पर आना मेरा अगला क़दम है। कहती हैं यहां मैं ने देखा कि रोज़ाना की बुनियाद पर हज़ारों शुरका को हैंडल करना और एक गांव का सेट अप लेकर उस की तामीर बिशमोल समस्त लोजस्टिक्स और समस्त सहूलयात का बहुत अच्छी तरह इंतिज़ाम किया गया। लोगों की एक बड़ी तादाद एक दूसरे के साथ तआवुन करती नज़र आई।क ो ई लाइनें नहीं थीं। लोग साथ के साथ सफ़ाई भी करते जा रहे थे। जलसा को मुम्किन बनाने के लिए अमले की पूरी टीम और रज़ाकारों की टीम को मुबारकबाद। नौजवान तलबा और हर एक को छोटे कामों में शामिल देखना, बड़े उद्देश्य के लिए तआवुन करते देखना हमेशा ख़ुश आइंद है। कहती हैं मुख़्तलिफ़ सेशंज़ में हिस्सा लेकर पुरअमन तवानाई महसूस हुई विशेषता आलमी बैअत की नशिस्त ज़िंदगी-भर याद रखूँगी। कहती हैं

अगर दुनिया में हर व्यक्ति इन्सानियत के लिए ज़्यादा शऊर, बेदारी और हमदर्दी पैदा करे जैसे जमाअत कर रही है तो यक़ीनी तौर पर आलमी मसायल हल किए जा सकते हैं।

अर्जनटाइन से आने वाले एक मेहमान टॉमस रेनिल (Tomas Randle) साहिब जिन्हों ने अर्जनटाइन की नैशनल सैक्रेटरी आफ़ वर्शिप की नुमाइंदगी का वर्णन करते हैं कि मैंने आपकी जमाअत के जलसा को रशक की निगाह से देखा। किस उम्दगी से और नज़म-ओ-ज़बत से आप लोगों ने इस क़दर बड़े मजमा का किया! कहने लगे कि हमारे मुल्क में नामुमकिन है बल्कि पुलिस की मौजूदगी में भी इस उम्दगी से इतने बड़े मजमा का तसव्वुर नहीं किया जा सकता और जो ख़लीफ़ा का औरतों से ख़िताब था वह इस पहलू से भी मुझे अच्छा लगा कि :

आप लोग मुआशरे के दबाओ और मग़रिबी दुनिया के असर के बावजूद पुख़्तगी से अपने उसूल पर हैं।

कहते हैं गो कि बहैसियत ईसाई मैं समस्त वर्णन किए बिंदुओं से सहमत तो नहीं लेकिन विशेषता जो फ़ैमिली लाईफ़ से मुताल्लिक़ा उमूर वर्णन किए गए वे मेरे लिए बहैसियत ग़ैर मुस्लिम भी निहायत लाभकारी थे।

तायवान से आई हुई मेहमान डाक्टर क्रिस्टी चांग साहिबा कहती हैं कि हमें एयरपोर्ट से बड़ा रीसीव किया गया। बहुत मेहमान-नवाज़ी का सुलूक किया गया और फिर हमें जलसा में शामिल होने का अवसर मिला जहां हमने देखा कि हज़ारों रज़ाकार काम सरअंजाम दे रहे हैं। मेरी हैरत की इंतेहा नहीं रही हैं।

मैं ने दुनिया के बहुत से देशों में बहुत बड़ी बड़ी कान्फ्रैंसज़ में शिरकत की है लेकिन इतनी बड़ी कान्फ्रैंस कभी नहीं देखी जिसका इंतेज़ाम रज़ाकार अंजाम दे रहे हों।

लजना से ख़िताब में भी ख़लीफ़ा वक़्त ने अहमदी बच्चियों की ज़िंदगी गुज़ारने के निहायत ख़ूबसूरत अंदाज़ सुखाय। इस ख़िताब के दौरान मैं बच्चीयों के expressions नोट करती रही। जिस तवज्जा से बच्चियाँ इन नसाएह को सुन रही थीं इस से अंदाज़ा हो रहा था कि अहमदी बच्चियाँ और नौजवान नसल अपने ख़लीफ़ा से मुहब्बत करती है। मैं पहली दफ़ा इमाम जमाअत से मिल रही थी मेरा तास्सुर था कि हमारी मुलाक़ात बड़ी फॉर्मल अंदाज़ में होगी, कई किस्म के तकल्लुफ़ात और हिदायात का सामना होगा परंतु बड़े ग़ैर फॉर्मल अंदाज़ में हमारी सारी बातें हुईं, हाल अहवाल पूछा, तायवान के बारे में भी दरयाफ़त किया। कहती हैं हमारे बहुत सारे सवाल थे लेकिन हम इमाम जमाअत के सवालों के जवाबात देने में इतने मगन हुए कि हमें कुछ पूछने का अवसर नहीं मिला। बहरहाल जलसा ने उन पर नेक असर क़ायम किया।

तायवान से आए हुए एक और मेहमान डाक्टर फ्रैंक साहिब कहते हैं बहुत लंबा सफ़र करके इस कान्फ्रैंस में शामिल हुए। तायवान से सफ़र पर निकले, बीजिंग पहुंचे थे कि तायवान में तूफ़ान की वजह से फ़्लाईट कैंसल हो गई परंतु हम फिर भी सफ़र

करने में कामयाब हुए, बख़ैरियत पहुंच गए और मुझे महसूस हो रहा था कि हमारा यह सफ़र मोजज़ाना है। कहते हैं जलसा में शामिल हो कर हमें लगा कि यह ख़ुदा की तक़दीर थी जिसकी बदौलत हम जलसे में शामिल हो सके। जलसा के इफ़्ततताही ख़िताब में इमाम जमाअत अहमदिया ने जब यह कहा कि यह कोई संसारिक जलसा नहीं बल्कि एक रुहानी इजतेमा है तो दुबारा मेरा यह यक़ीन पुख़्ता हो गया कि बज़ाहिर मुश्किल हालात के बावजूद जिस तरह ख़ुदा ने हमें जलसा में शिरकत का अवसर दिया यह सब ख़ुदा की अता और चमत्कार का परिणाम है। कहते हैं कि हम मियां बीवी ताइवान से जलसा में शामिल होने वाले अव्वलीन लोगों में से हैं।

हम इस अहद के साथ इस जलसा से वापस जा रहे हैं कि अपने वतन वालों को बताएं कि जमाअत अहमदिया बहुत पुरअमन और बहुत मुनज़्ज़म और बाअख़लाक़ जमाअत है।

और हम आइन्दा सालों में मज़ीद मेहमानों को जलसा सालाना में शामिल होने की तहरीक करेंगे।

कैनेडा से एक ईरानी नज़ाद मेहमान यह मुझे यासीन अहमदी साहिब लगते हैं। उन्होंने फ़लसफ़ा में पी एच डी की हुई है। सहाफ़ी भी हैं। उन्हों ने कहते हैं मैंने अहमदिया जलसा सालाना को दीन की शक्ल में हिक्मत और अक़ल का एक आकर्षक मुज़ाहरा पाया। जलसा सालाना की रूह मुस्लमानों के दरमयान बराबरी के निशानात से भरपूर थी। जब मैं ने इस जलसा में शिरकत की तो पहले ही लम्हे से मैं ने महसूस किया कि मुस्लमान ख़ुशक और बे लचक दीनी तशरीहात से हट कर ज़मीन पर रहने वाले इन्सानों के साथ हमदर्दी के खुले उफ़ुक़ की जानिब लौट रहे हैं। जमाअत को देख के मुझे अंदाज़ा हुआ कि अहमदियों की शान-ओ-वक़ार और सब्र-ओ-तहम्मुल और इस्लामी तालीमात की मोतदिल तशरीह सदियों की मज़हबी ख़ूँरेज़ी और तशद्दुद के बाद इलाही हिदायात के साय में एक पुरसुकून और पुरअमन ज़िंदगी की हवा थी। अहमदिया तालीमात का जदीद तहज़ीब के साथ मेलजोल होना इन ख़ूबसूरत पहलूओं में से एक था जो वाज़ेह तौर पर नुमायां किया गया था। मैं उम्मीद करता हूँ कि अहमदिया जमाअत के ख़्यालात ज़्यादा से ज़्यादा शान-ओ-शौकत और तेज़ी से मुस्लमानों और ज़मीन पर रहने वाले दीगर लोगों में फैलेंगे ताकि हर एक निजात, ख़ुशहाली और कामयाब ज़िंदगी का तजुर्बा हासिल कर सके।

बेलीज़ से आए हुए मेहमान रोनल्ड हाईड (Ronald Hyde) साहिब कहते हैं। वह बैअत की तक़रीब के दौरान अपने जज़बात को वर्णन नहीं कर सकते। उन्हें अल्लाह की मौजूदगी महसूस हो रही थी। कहते हैं बहुत से मर्द बग़ैर किसी दुनियावी फ़िक्र के ज़ोर ज़ोर से रोते और अल्लाह की मग़फ़िरत की दुआ मांगते। बैअत का यह तजुर्बा उनकी ज़िंदगी पर गहरे असरात छोड़ गया है। इतने बड़े इजतेमा को और लोगों की इतनी बड़ी संख्या को बग़ैर कोई शराब और मौसीक़ी के देखना वाक़ई हैरत-अंगेज़ था और यह देखना कि हर कोई सिर्फ़ रूहानियत में इज़ाफ़ा करना चाहता है वाक़ई काबिल-ए-तारीफ़ था। यह वास्तव में एक ज़िंदगी बदलने वाला तजुर्बा था। सिर्फ डयूटी वाले ही नहीं बल्कि जो शामिल होने वाले हैं उनको देखकर भी उन लोगों में ख़ामोश तब्लीग़ होती है।

मुबल्लिग़ सिलसिला बोलियो कहते हैं कि कार्लोस होगो (Carlos Hugo) साहिब तीसरी दफ़ा जलसा पर आए हैं और कुछ अरसा से इस्लाम की तालीम का अध्ययन कर रहे थे। एक माह क़बल उन्होंने बैअत भी कर ली थी और जलसा सालाना में उनको आलमी बैअत की तक़रीब में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। कहते हैं कि जलसा सालाना यू.के मेरी ज़िंदगी का सबसे अहम तरीन रुहानी अनुभव था। मैं महसूस करता हूँ कि मेरा दिल और मेरी रूह आलमी बैअत की तक़रीब में शामिल होने के बाद रूहानियत से भर गए हैं और मैं एक हक़ीक़ी अहमदी बन गया हूँ। बतौर एक नौ मुबाईन कहते हैं मुझे ख़लीफ़ा वक़्त ने यह नसीहत की कि नमाज़ तवज्जा से पढ़ो और ख़ुदा के साथ पुख़्ता ताल्लुक़ पैदा करो और जमाअत बोलियो मैं अहमदियों को क़ुरआन-ए-मजीद पढ़ने की तरफ़ तवज्जा दिलाओ। कहते हैं इस पर मैं ख़ुद भी अमल करूँगा और बताऊँगा भी।

यौरागोय से आई हुई एक ग़ैर अज़ जमाअत मेहमान मारिया सोलस् फ्रैंको (Maria Sol Caballero Franco) साहिबा कहती हैं। जलसा सालाना मेरी आशाओं से बहुत बेहतर साबित हुआ। सबसे पहले मेहमानों की रिहायश मिसाली थी। तक़रीरें प्रभावी थीं। पहला सैशन मेरा पसंदीदा था। 'मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं के पैग़ाम को बढ़ाना और फैलाना बहुत अहम है। मैंने मजमूई माहौल में बिरादरी का ख़ुशगवार एहसास पाया। इंतेज़ामिया ने भी नुमायां किरदार अदा किया। एक बड़ा ईवंट होने के बावजूद इस में कभी भीड़ नहीं देखी और न यह क़ाबू से बाहर महसूस हुआ। कारों के लिए अच्छी तरह मन्सूबा बंद रास्ते और वाज़ह इशारे, शानदार लॉजिस्टिक्स थीं जिसने बिला-शुबा बहुत से शामिल होने वालों को प्रभावित किया। जलसा में शिरकत ने मेरी रूहानियत पर मुसबत असर डाला। सबसे यादगार लमहात में से एक इतवार को अहमदी अहद को दोहराना था, अर्थात बैअत, जहां सबने मिलकर दुआ की और आँसू बहाए। ऐसा मज़बूत ईमान का जज़बा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। अगर मुझे तजवीज़ करना हो तो यह होगा कि मेहमानों के लिए तक़रीबात के दरमयान मज़ीद सरगर्मीयां होनी चाहिए। मज़ीद यह कि ख़वातीन मेहमानों को हिजाब पहनने का पाबंद नहीं करना चाहिए। यह पाबंद तो नहीं किया जाता या तो उनको ग़लतफ़हमी हुई है या किसी कारकुन ने यूंही कह दिया होगा। विशेषता तो मेरा ख़्याल है हम यह नहीं कहते। लेकिन लिबास बहरहाल हम कहते हैं कि हयादार होना चाहिए। बहरहाल कहती हैं कि हिजाब दस्तयाब ज़रूर हों जो चाहे वे पहन ले।

कोस्टारिका से आई हुई एक मेहमान लोरीना वेला (Lorena Villa Lobos) कहती हैं कि कोस्टा रेकह में उनका मुस्लिम मज़हबी तन्ज़ीमों से वास्ता रहता है परंतु उनमें औरत का किसी किस्म का कोई किरदार नज़र नहीं आता बल्कि केवल मर्द ही मज़हब की नुमाइंदगी करते हैं जो ख़ास मज़हबी ओहदों पर निर्धारित होते हैं परंतु जमाअत अहमदिया के जलसा सालाना में शिरकत करके मुझे हैरत भी हुई और ख़ुशी भी कि जमाअत अहमदिया में औरत को मर्द के बराबर स्थान दिया जाता है। दूसरे दिन जब वे औरतों के जलसा गाह में गईं तो औरतों का डिसिप्लिन और सफ़ाई का मयार बहुत बेहतर नज़र आया कहती हैं :

मुझे बताया गया कि जमाअत अहमदिया दुनिया में क़ियाम-ए-अमन, सलामती और एंटर फ़ेथ डायलॉग के लिए काम कर रही है तो मुझे शुरू में यही महसूस हुआ कि ये सब कुछ केवल बयानात तक महिदूद है लेकिन जलसा में शिरकत करके अपने तजुर्बे से देखा और तसदीक़ की कि जमाअत जो ग़ैरों को बयान देती है ख़ुद इस पर अमल भी करती है।

जमात के अक़ायद और अमल एक ही हैं।

बरोंडी से आए हुए एक मेहमान हातू नगीमाना पोनीते (Hatungimana Pontien) साहिब हैं जो सैक्रेटरी वज़ारत क़ौमी यकजहती और समाजी उमूर और इन्सानी हुक़ूक़ बरोंडी हैं। अपने ख़्याल का इज़हार करते हुए कहते हैं। मेरा बड़ा जोशीला इस्तिक़बाल एयरपोर्ट से ले के रिहाइशगाह तक किया गया। नौजवान रज़ाकारों ने मुझे ख़ुश-आमदीद कहा। मेरा नियमित शानदार मेहमान-नवाज़ी की गई। तीन दिनों में जमाअत अहमदिया की तरफ़ से बेलौस मुहब्बत के साथ हिफ़ाज़त और बिला तफ़रीक़ मज़हब-ओ-मिल्लत रंग-ओ-नसल जो मेहमान-नवाज़ी की गई मैं उसे हमेशा याद रखूँगा। कहते हैं बावजूद उस के कि मेरा अक़ीदा कुछ मुख़्तलिफ़ है लेकिन हम सब एक अल्लाह की मख़लूक़ हैं जो हम सबसे मुहब्बत करता है और हमारा एक ख़ून है। जलसा की तक़ारीर इस्लामी तालीमात से माला-माल हैं और अहमदिया कम्यूनिटी के अक़ायद के बारे में कुछ लोगों की ग़लत तशरीहात पर रोशनी डालती हैं या उनके जवाबात फ़राहम करती हैं।

दुनिया-भर में कामयाबियों के बारे में आपकी रिपोर्ट ने दिखाया है कि आप विशेष ज़रूरियात वाले लोगों को ख़िदमत के मंसूबे फ़राहम करके उनकी मदद करने में अपना हिस्सा डालते हैं और मैं अपने मुल्क बरोंडी में इन ख़िदमात का गवाह हूँ। कहते हैं इतनी बड़ी कान्फ्रैंस किसी इन्सान का काम नहीं है, ये केवल अल्लाह तआला का मुआमला है। यह एक वसीअ-ओ-बलीग़ निशानी है जो इस बात की गवाही देती है कि आप जो कुछ भी करते हैं हमेशा अल्लाह तआला का हाथ इस में होता है और फिर यह दुआ देते हैं कि अल्लाह तआला आपकी हिफ़ाज़त में रहे।

आईस से आए हुए एक ग़ैर अहमदी मेहमान सुलेमान बाह साहिब जो पैदाइशी तौर पर तो गैमबेन हैं कहते हैं जलसा में शामिल हो कर जमाअत के विषय में ज्ञान में बढ़ोतरी हुई। मुख़्तलिफ़ नुमाइशों की ज़यारत करने के बाद मैंने देखा कि जमाअत दुनिया-भर में क्या कर रही है।

जमाअत के इलम के हुसूल और इलम को फैलाने की काविशों ने मेरे पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है। इस बात ने भी मुझ पर गहरा असर छोड़ा कि तैंतालीस हज़ार अफ़राद की शमूलीयत के बावजूद पर्दे का लिहाज़ रखा गया और मर्द और औरतें अपनी-अपनी जगह पर काम कर रहे थे।

कहते हैं मैं कई इस्लामी जलसात और प्रोग्रामों में शामिल हो चुका हूँ जबकि वहां केवल चंद हज़ार की संख्या थी। मर्दों और औरतों का मेल मिलाप हो रहा था लेकिन

जलसा में इतनी बड़ी संख्या के बावजूद पर्दे का ख़्याल रखा जा रहा था। यह कोई मामूली बात नहीं है, यह भी एक ख़ामोश तब्लीग़ है जो उन लोगों को हमारे अमल से होती है, और इसके लिए जमाअत को दाद देनी चाहिए। जलसा का इंतेज़ाम और निज़ाम बहुत आला था। लोग एक दूसरे के साथ एहतेराम से पेश आते थे। कारकुनान ख़ुशी से काम कर रहे थे और एक smooth निज़ाम चल रहा था और ये सब कुछ चंद दिनों की तैयारी का नतीजा नहीं बल्कि एक लंबा अरसा की तैयारी जारी थी। कहते हैं जामिआ में जहां मेरी रिहायश थी वहां मेटर्स बिछा दी गई थीं वहां हम सारे सो रहे थे और कोई तफ़रीक़ नहीं थी। मेहमानों के साथ हर एक से एक तरह से व्यवहार किया जा रहा था। फिर एक तजवीज़ वे देते हैं कि शायद बेहतर इंतेज़ाम हो सके कि जलसा गाह में जबकि उसीका इंतेज़ाम था लेकिन गर्मी की शिद्दत फिर भी महसूस हो रही थी और वेंटीलेशन, एयरवेंटीलेशन की कमी महसूस हो रही थी जिसकी वजह से कहते हैं नींद आ जाती थी और मैं समझा था कि केवल मुझे नींद आ रही है लेकिन बाक़ी लोग भी मैं दाएं बाएं देख रहा था तो वे भी कई दफ़ा ऊँघ जाते थे। इसलिए ताज़ा रखने के लिए हवा का निज़ाम चाहिए।

अर्जनटाइन के मुबल्लिग लिखते हैं कि मारीना प्लाज़ा (Mariana Plaza) साहिबा अर्जनटाइन की यू.के में सफ़ीर हैं। जलसा में उन्होंने पहली मर्तबा शिरकत की। वह जलसा के माहौल और तक़रीब से इस क़दर प्रभावित हुईं कि उन्होंने जलसा के बाद अर्जनटाइन सिफ़ारत ख़ाने में एक बाक़ायदा रेस्पशन का इंतेज़ाम किया जिसमें उन्होंने लैटिन (Latin) अमरीका से जलसा में शामिल होने वाले ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों को दावत दी। इस रेस्पशन के दौरान अर्जनटाइन सफ़ीर ने वर्णन किया कि वह विशेषता इन हुकूमती ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों का शुक्रिया अदा करती हैं जिन्हों ने जमाअत अहमदिया के जलसा में शिरकत की और इस तरह जमाअत के पैग़ाम को प्रोमोट करने में अपना किरदार अदा किया। उन्होंने कहा कि :

विशेषता मज़हबी तंज़ीमें डिप्लोमैट्स या सियासतदानों को ख़ुसूसी external तक़रीबात के लिए केवल दावत करती हैं और तक़रीब के विशेषता हिस्सा में दावत देकर फिर अल्विदा कर देते हैं लेकिन इस के विपरीत यह बहुत ग़ैरमामूली और काबिल-ए-तारीफ़ कार्य है कि आपकी जमाअत ने हम सब ग़ैराज़ जमाअत मेहमानों से कोई पर्दा नहीं रखा।

इस का यही नतीजा निकलता है कि आपका कोई ख़ुफ़ीया एजंडा नहीं है बल्कि आपकी समस्त शिक्षाएं प्रकट हैं और जो तालीमात आप ग़ैरों को पेश करते हैं वे आपके अपने अंदर अंदरूनी अक़ायद और एजंडे के ऐन मुताबिक़त हैं।

ब्राज़ील से एक अख़बार की ऐडीटर जैको लेनी (Jaqueline) साहिबा शामिल हुईं, महिला हैं। कहती हैं कि मैं इस अज़ीमुश्शान जलसा से हर लिहाज़ से बहुत प्रभावित हुई। विशेषता उस के स्ट्रक्चर और मुख़्तलिफ़ देशों से बड़ी संख्या में जो लोग शामिल हुए उनका आपस में बड़ी मुहब्बत और प्यार के साथ रहना, समस्त इंतेज़ामात से जिन्हों ने इस बात को यक़ीनी बनाया कि जलसा हर लिहाज़ से कामयाब रहे। अमन इत्तिहाद और मुहब्बत की फ़िज़ा से मुझे बहुत ख़ुशी हुई और इमाम जमाअत की पुरहिक्मत बातों ने मेरे दिल को छुआ और मेरे ज़हन को केवल अच्छी बातों के लिए खोला। ख़लीफ़ा वक़्त की बातों में केवल ज़ाहेरी अल्फ़ाज़ ही नहीं थे बल्कि दिल से निकली हुई मुख़लिसाना बातें लग रही थीं। इस जलसा के दौरान मुहब्बत और इज़्ज़त को हर लम्हे महसूस किया। रज़ाकारों ने जिस तरह दिलजमई से काम किया वह यक़ीनन दिल पर-असर करने वाला और काबिल-ए-तारीफ़ है।

ब्राज़ील से ही एक अख़बार के जर्नलिस्ट कहते हैं। एक ग़ैरमामूली जलसा था। मेरे दिल में जमाअत अहमदिया के लिए जो इज़्ज़त और ख़ैर ख़्वाही की भावना थी जलसा के बाद इस में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ है। रज़ाकारों की बेलौस ख़िदमत ने मेरी तवज्जा खींच ली कि कैसे वे अपने वक़्त, अपनी गाड़ियों और अपनी ख़िदमात को मेहमानों के लिए वक़्फ़ कर देते हैं। यह बहुत प्यारी बात है।

इटली की यूनीवर्सिटी आफ़ फ्लोरेंस के इंटर फ़ेथ डायलॉग के प्रोफ़ैसर रोबर्टो कातालानो (Roberto Catalano) हैं। वह जलसा में शामिल हुए। कहते हैं मैं इस तक़रीब से हैरान रह गया। यह जलसा दुनिया-भर की क़ौमों से कई हज़ार नुमाइंदों को इकट्ठा करता है। जमाअत अहमदिया के काबिल-ए-ज़िक्र इत्तिहाद को ज़ाहिर करता है।

जलसा में एक रुहानी माहौल महसूस किया जा सकता है और इमाम जमाअत भी जब कुछ बोलते हैं तो पाठकों की मुकम्मल ख़ामोशी और तवज्जा हैरानकुन होती थी। एक गहरा रुहानी माहौल क़ायम हो जाता था।

रज़ाकारों की लगन भी इतनी प्रभावी थी कि हज़ारों रज़ाकार जिनमें बच्चे भी शामिल हैं बहुत मेहनत से काम करते हैं। कहते हैं जलसा में विशेषता एक यादगार लम्हा आलमी बैअत का था जिसमें ख़लीफ़ा वक़्त के हाथ पर बैअत की गई। यह मुक़द्दस और शानदार तक़रीब चालीस हज़ार लोगों को एक साथ जोड़ती है जो उनके इजतेमाई ईमान और वाबस्तगी की एक ताक़तवर दलील है। कहते हैं विशेषता पाकिस्तान में जमाअत पर मज़ालिम और दरपेश मुश्किलात के हवाले से मेरी मालूमात में इज़ाफ़ा हुआ। इन मुश्किलात और मसायब के बावजूद नफ़रत न करने के व्यवहार ने मुझे प्रभावित किया है जो आपके ईमान की एक हक़ीक़ी गवाही पेश करता है।

रोडगज़आइलेंड से वहां की वीमन अफेयर्ज़ और फ़ैमिली वेल्फेयर की कमिशनर आगअथे मेरी साहिबा भी आई थीं। कहती हैं पहली बार इतनी बड़ी तक़रीब में शिरकत की जहां सौ से ज़्यादा देशों के लोग मौजूद थे और मुख़्तलिफ़ क़ौमियतों से ताल्लुक़ रखने वाले लोग शामिल थे। तक़रीबन चवालीस हज़ार शुरका के साथ यह जलसा मेरे लिए रोड्रग्ज़ जज़ीरे की पूरी आबादी के जमा होने का था।

जिस चीज़ ने मेरे दिल को पिघला दिया वह यह थी कि जलसा सालाना में शामिल लोग कितने नज़म-ओ-ज़बत के साथ बैठे थे। हर कोई मुस्कुरा रहा था, हर एक को सलाम कर रहा था। यह काबिल-ए-तारीफ़ है।

और इमाम जमाअत का लजना से ख़िताब भी बहुत मानी-ख़ेज़ था जिस से मुझे पता चला कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में महिलाओं का किरदार कितना अहम है। मुझे यक़ीन है कि यह ख़िताब मेरी पालिसी में भी मुसबत तबदीलियाँ लाएगा। मैंने इस जलसा में बहुत कुछ सीखा जो यक़ीनी तौर पर मेरी और मेरे इर्द-गिर्द के लोगों की ज़िंदगियों में मुसबत तबदीलीयां लाएगा।

मैंने माज़ी में कई मज़हबी प्रोग्रामों में शमूलियत की है लेकिन मैं हमेशा दिल की गहिराईयों से जानती थी कि मेरी ज़िंदगी में कुछ रुहानी पहलूओं की कमी है लेकिन जलसा वह तक़रीब थी जिसकी वजह से मेरी ज़िंदगी में जो भी कमी थी वह भी पूरी हो गई।

रुहानी पहलूओं में कमी का यह इज़हार भी बहुत सारे लोगों ने किया है और हमें यहां बेहतर हालात मिले।

टीमो एंडरसन होयस (Temu Anderson Hoyce) साहिबा हैं। तनज़ानिया की तरफ़ से अक़वाम-ए-मुत्तहिदा जिनेवा में बतौर सफ़ीर निर्धारित हैं,कहती हैं कि : मैंने यहां पर आकर मुहब्बत और मुस्कुराहटों को पाया और इन दिनों कहीं भी नफ़रत देखने को नहीं मिली।

मस्तूरात के इजलास की कार्रवाई बहुत मालूमाती और प्रभावी थी। मैंने जलसा पर जो नुमाइशें देखीं वह भी बहुत ख़ूबसूरत थीं जिनमें जमाअत के बानी और बुज़ुर्गान का निहायत उम्दा परिचय करवाया गया। इस मज़बूत जमाअत के संस्थापक और हीरोज़ की तारीख़ को ख़ूबसूरती से पेश किया गया। जमाअत अहमदिया ने बहुत से लोगों की ज़िंदगियों को नुमायां तौर पर बदल दिया है जिनमें मेरा प्यारा मुल्क तनज़ानिया भी शामिल है। इस जलसा ने इन्सानी हमदर्दी और मुहब्बत के साथ ज़िंदगी जीने और बग़ैर किसी नफ़रत के इस की क़दर करने का अवसर दिया।

सैरालैयोन के एक मेहमान जस्टिस आयोन सीसे (Ivan Sesay) कहते हैं। जलसा सालाना के तीन दिन अमन, रुहानी तरक़्क़ी और आलमी यकजहती के दिन थे। जलसा का इंतेज़ाम बहुत आला था। रंग-ओ-नसल का कोई इमतेयाज़ नहीं था। समस्त लोग एक दूसरे के शाना बशाना काम कर रहे थे। हर कोई अपनी मुजव्वज़ा डयूटी बख़ूबी अंजाम दे रहा था चाहे वह बच्चे हों या कोई और। मैं यह देखकर बहुत हैरान हुआ। भाषण देने वाले और बड़े धार्मिक नेताओं और उल्मा ने गहरी बसीरत और प्रभावित करने वाले भाषण दिए जो हर किसी के दिल में घर कर गए। मुझे विशेषता शांतिप्रिय इत्तिहाद और इफ़हाम-ओ-तफ़हीम पर-ज़ोर देने की तालीम ने बहुत प्रभावित किया है। बेशुमार सरगर्मीयां और नुमाइशें भी थीं जिन्हों ने जलसा को पुररौनक़ बना दिया। तालीमी नुमाइशें अच्छी तरह पेश की गईं जो तारीख़ी और सक़ाफ़्ती बसीरत पेश करती थीं। फिर कहते हैं कि मुझे मुख़्तलिफ़ वर्गों से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों से मिलने और बातचीत करने के बेशुमार अवसर मिले जिससे इत्तिहाद और भाई चारे के जज़बात को फ़रोग़ मिला। फिर कहते हैं मेरे लिए एक अहम लम्हा वह कलीदी तक़रीर थी जिसमें इमाम जमाअत ने इन्सानियत की हमदर्दी और ख़िदमत की एहमीयत पर रोशनी डाली। सोशल मीडीया या इलैक्ट्रॉनिक नैट वर्क्स के दरमयान अपने बच्चों के लिए वालदैन के किरदार और निगरानी न

करने की सूरत में बच्चों पर पड़ने वाले मनफ़ी असरात पर उनका ज़ोर हमारे मातापिता के लिए भीमार्गदर्शन और प्रभावित करने वाला था। कहते हैं जलसा सालाना के इंतेज़ामात तक़ारीर और जमाअत के लोगों की ख़िदमत मेरी आशाओं से कहीं बढ़कर थीं।

काज़किसतान से एक मेहमान गुल साईरां मेंगाली साहिबा हैं ,कहती हैं मैं पहली मर्तबा इतने अज़ीम मज़हबी जलसा में शामिल हुई हूँ। बतौर साबिक़ा सियास्तदान मुझे अनुभव है कि इतने बड़े इंतेज़ाम के लिए कितने अख़राजात होते हैं और इस आला सतह के इंतेज़ाम के लिए कितनी प्लैनिंग और कितने लोगों की अनथक मेहनत लगी होगी और में इस बात से बहुत प्रभावित हूँ कि समस्त कारकुनान हर विभाग में बहुत जज़बे और ख़ुशी से काम कर रहे थे। हर कारकुन अनथक मेहनत करने के बावजूद मेहमानों से मुहब्बत, इज़्ज़त और प्यार से पेश आ रहा था। हैं लेकिन जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह ख़लीफ़ा वक़्त के खिताबात थे। इन खिताबात में बज़ाहिर आम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में काम आने वाली अख़लाक़ीयात की बातें थीं परंतु उनके पीछे एक बहुत वसीअ और गहरा मज़मून था।

जो बात मुझे सबसे ज़्यादा पसंद आई वह यह थी कि उन्होंने बच्चों की तर्बीयत पर सोशल मीडीया का बद असर बहुत वाज़ेह और सरीह तौर पर वर्णन फ़रमाया। इस बात से मैंने बहुत कुछ सीखा है और अब मैं इस को अपनी ज़िंदगी में लागू करने की कोशिश करूँगी कि जब मैं अपने पोते पोतियों से बात करूँगी तो उनको समझाऊँगी कि हमें अपनी ज़िंदगी में कामयाबी हासिल करने की कोशिश में अपनी अख़लाक़ीयात को कभी नहीं भूलना चाहिए।

यहां से इतनी प्रभावित थीं कि कहती हैं इस दफ़ा तो मैं बतौर मेहमान आई थी परंतु मुझे पूरा यक़ीन है कि मैं अनक़रीब इस जमाअत में शामिल हो जाऊँगी क्योंकि मैंने इस जलसा में जो बातें सुनी हैं वे मुझे पसंद हैं।

मुल्क बेलीज़ से आने वाले मेहमान काश सानकूफ़ा साहिब कहते हैं। कोई कैसे इंकार कर सकता है कि अहमदियत हक़ीक़ी इस्लाम नहीं है। मेरे समस्त शकूक-ओ-शुबहात और सवालात के जवाब मिल गए हैं। जब में उन्हें देखता हूँ कि जमाअत अहमदिया में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कितनी मुहब्बत की जाती है। अहमदियत एक बहुत बड़ा मज़बूत दरख़्त है जिसकी बहुत सी फलदार शाख़ें हैं।

स्पेन की एक मेहमान आमालिया (Amalia) यह यूनीवर्सिटी आफ़ क़ुर्तुबा की हैं। लिखती हैं कि बतौर प्रोफ़ैसर साईकालोजी मैंने आपके तजुर्बात को जानने में बहुत दिलचस्पी रखी। मैंने अवसर का फ़ायदा उठाया और उन लम्हों को मुशाहिदा किया और अपने दिमाग़ में महफ़ूज़ कर लिया जो मेरी यादों का हिस्सा बनेंगे और जिन्हें में बहुत मुहब्बत के साथ याद रखूँगी। मुझे इस जलसे की वि विधता और इस की वुसअत और हर कोने में जो अमन और हम-आहंगी महसूस होती है उसने बहुत ज़्यादा प्रभावित किया है।

कोसोवि की एक यूनीवर्सिटी के फिज़िक्स के प्रोफ़ैसर हैं आरबेर ज़ेकराज (Arber Zeqiraj) कहते हैं में पहली दफ़ा बर्तानिया के जलसा में शामिल हुआ और ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुतबात जुमा सुनने के बाद यह बात देखने में आई कि सारा माहौल एक दम से बेहतर हो गया है। कारकुनान और मेहमानों के दरमयान ज़ाहेरी तौर पर मुहब्बत और उलफ़त के जज़बात एक दूसरे के लिए नज़र आ रहे थे। मुस्कुराते चेहरे और अस्सलामो अलैकुम की आवाज़ें हर तरफ़ सुनाई दी जा रहीं थीं।

ऐसे माहौल को जन्नत से मुशाबहत दी जा सकती है। अगर इतने बड़े मजमा में ऐसा माहौल पैदा किया जा सकता है तो बईद नहीं कि पूरी दुनिया में ऐसा माहौल बनाया जा सके लेकिन केवल जमाअत अहमदिया ही है जो यह काम कर सकती है।

जिस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है वह यह था कि अगर कारकुन किसी मजबूरी के बाइस न भी कहते तो फ़ौरन उस का हल भी पेश कर देते थे ताकि मेहमान का हर तरह ख़्याल रखा जा सके। कहते हैं तक़रीब बैअत को देखकर बहुत हैरान हूँ कि किस तरह मुख़्तलिफ़ अक़्वाम के लोग एक हाथ पर इकट्ठे होते हैं गोया कि एक लड़ी में पिरोए हुए मोती हों।

यौरागोए से आई हुई एक ग़ैर अज़ जमाअत जर्नलिस्ट हैं। कहती हैं जलसा में शिरकत से पहले मुझे बहुत सी उम्मीदें और बहुत से द्वेष पूर्ण संदेह थे। यौरागोए में मेरे प्राजैक्ट के लिए इस्लाम को क़रीब से जानना और विशेषता इस काम को जानना ज़रूरी था जो आपकी कम्यूनिटी कर रही है। पहले दिन की तक़रीर जहां ख़लीफ़ा ने मेहमान-नवाज़ी की बात की वह विशेषता प्रभावित करने वाली थी। एक मेहमान के तौर पर मैं समझती हूँ कि शायद हम मेहमान किसी विशव्यापी धार्मिक पैग़ाम की तवक़्क़ो कर रहे थे लेकिन यह पैग़ाम कम्यूनिटी को संबोधित कर के दिए गए थे। कहती हैं मैं ने ख़ुदा की बड़ाई और नियमित प्रशंसा के माहौल में बहुत आराम महसूस किया। फिर कहती हैं कि मैंने अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के अंदर मुख़्तलिफ़ सक़ाफ़्तों के बारे में बहुत कुछ सीखा और इस से मेरे बहुत से द्वेष पूर्ण संदेह ख़त्म हो गए। फिर कहती हैं मुझे महिलाओं की तरफ़ से कुछ रिकार्ड करने की इजाज़त नहीं थी। मैं समझती हूँ कि इस में कोई ख़तरा या हर्ज नहीं है। अगर तो उनकी मुराद तस्वीरों से है तो ख़ैर वह अच्छा किया कि नहीं दी। इस के इलावा तो रिकार्ड कर सकती हैं। रिकार्डिंग बाद में भी ले सकती हैं जो वह चाहती हैं। बहरहाल यह तो जो वहां से आए हुए मुरब्बी हैं वह उनको समझा सकते हैं। फिर कहती हैं कि कोई हर्ज नहीं था कि अगर इजाज़त दी जाती तो हम अपने मुल्क में फैलाने के लिए बेहतर मवाद बना सकते थे। जलसा सालाना में शिरकत का मेरी रुहानी ज़िंदगी पर विशेष प्रभाव पड़ा है।

मेरे लिए सबसे यादगार लम्हा मर्दों को अल्लाह तआला से दुआ के वक़्त रोते हुए देखना था।

मुझे लगता है कि सहाफियों की शिरकत के इंतेज़ाम को इस तरह बेहतर बनाया जा सकता है जिससे ईवंट की बेहतर कवरेज हो सकती है। मेरा मश्वरा है कम्यूनिटी के कामों और काम करने के तरीक़ा कार को दुनिया के सामने ज़्यादा फैलाया जाए।

पोलैंड से एक महिला मेहमान ईनापेलोसका साहिबा शामिल हुईं। वह कस्टमर स्पोर्ट डिपार्टमैंट में काम करती हैं। कहती हैं मैं ख़ुदा पर यक़ीन रखती हूँ लेकिन अपने आपको किसी भी मज़हब का हिस्सा नहीं समझती। मेरा जमाअत के साथ एक अहमदी के माध्यम से परिचय हुआ जो कि मेरे साथ काम करता था। मैंने महसूस किया कि वह अपनी जमाअत पर बड़ा गर्व करता है और इसके विषय में दूसरों को बताता रहता है। इसलिए मुझे भी जमाअत अहमदिया के बारे में कुछ मवाद और वेबसाइट का लिंक मिला। फिर कहती हैं कुछ अध्ययन के बाद मैंने जलसा सालाना यू.के में शामिल होने का फ़ैसला किया। मैंने जलसे के एतबार से अपना लिबास और स्कार्फ भी ख़रीदा। जब मैंने जलसा की तरफ़ सफ़र शुरू किया तो मेरे जज़बात मिले जुले थे। थोड़ा डरी हुई भी थी। फिर कहती हैं जलसा के पहले दिन जलसा गाह में मुझे इलम नहीं था कि कौन सा रास्ता इख़्तेयार करना है। इस दौरान एक लड़की ने बग़ैर मेरे पूछे मदद की पेशकश की जिसने मुझे बहुत हैरान किया। जलसा गाह पहुंचते ही अपने आपको महफ़ूज़ महसूस करने लगी इसके होते हुए कि वहां इतनी बड़ी संख्या में लोग थे लेकिन मैंने कोई और शांतिप्रिय महसूस नहीं किया। जलसा के अवसर पर मुख़्तलिफ़ ख़ताबात विशेषता इमाम जमाअत के ख़ुतबात ने मेरा जमाअत अहमदिया के साथ ताल्लुक़ मज़बूत कर दिया है। मेरे लिए सबसे यादगार लजना का ख़िताब था जिसमें राहनुमाई थी कि बच्चों को कैसे प्रवान चढ़ाना है। ख़िताब के दौरान में अपने बच्चों के बारे में सोचती रही कि इमाम जमाअत ने ख़िताब के दौरान जिन इक़दार का वर्णन किया क्या मैं इस से मुकम्मल इत्तिफ़ाक़ करती हूँ और सबको इंतेहाई अहम और काबिल-ए-ज़िक्र समझती हूँ।

कोसोवि यूनीवर्सिटी पृष्टिना (Prishtina) के प्रोफ़ैसर हैं। वह तास्सुरात वर्णन करते हैं कि पहली दफ़ा जलसा में शामिल हुआ। मुझे हर जगह प्यार और मुहब्बत देखने को मिली। यह जलसा मेरे नज़दीक इंतेहाई कामयाब रहा विशेषता जो नुमाइशें थीं। कहते हैं हम कोसोवि से हैं और जमाअत की दुनिया-भर में जो मुख़ालेफ़त है इस को सुनकर बहुत तकलीफ़ हुई। इमाम जमाअत के इख़तेतामी ख़िताब ने मुझे इस बात की तरफ़ तवज्जा दिलाई कि इस्लाम अहमदियत की हक़ीक़ी तालीम क्या है। और मेरे सवालों के जवाबात मुझे मिल गए। मैं कोसोवि जा कर ज़रूर उन लोगों को जो जमाअत अहमदिया के अक़ायद के ख़िलाफ़ बात करते हैं जवाबात दूँगा

फिर हॉलैंड के एक मेहमान मिस्टर चिर्क फॉन (Churk Van) कहते हैं कि अहमदिया कम्यूनिटी की मेहमान-नवाज़ी और हज़ारों अफ़राद की रज़ाकाराना कोशिशों से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। सब के लिए एहतराम, मुहब्बत और अमन का माहौल था। फिर कहते हैं कि फिर इमाम जमाअत से मुलाक़ात भी मेरी हुई। बड़ा अच्छा अनुभव था और उन्होंने न केवल हमारे से मुलाक़ात की बल्कि इस्लाम के बारे में अहमदी और ग़ैर मुस्लिम दोनों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए वक़्त भी निकाला और मुझे उसका बड़ा फ़ायदा हुआ। कहते हैं इन बातों ने मेरे दिल में घर कर लिया है और बग़ैर किसी उकताहट के उन्होंने तसल्ली के साथ हमारी बातें सुनी और हमें जवाब दिए।

तो ये चंद तास्सुरात थे जो मैंने वर्णन किए जलसा सालाना के नतीजा में जो

बैअतों की रिपोर्ट है वह इस तरह है कि जलसा के प्रोग्राम देख के गिनी बसाऊ के एक गांव के नंबरदार की पचासी अफ़राद के साथ बैअत हुई। तनज़ानिया में एक गांव के इमाम मस्जिद की बैअत हुई। नाईजेरिय में एक मदरसे की माल्लमा की बैअत हुई। कांगोबराज़ावैल में दौरान जलसा बारां लोगों ने बैअत की।

गिनी बसाऊ के मुबल्लिग़ लिखते हैं गिनी बसाऊ में एक जगह सारिए कूओ के नंबरदार जमाअत के शदीद मुख़ालिफ़ थे। जलसा सालाना के अवसर पर उन्होंने जलसा की कार्रवाई और मेरे ख़ताबात सुने। उनको दावत दी गई थी कि आ के सुन लें। कहते हैं यह ख़िताब सुनने के बाद उन्होंने कहा कि आपके ख़लीफ़ा और बानी जमाअत अहमदिया के सच्चे आशिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और हमें हमेशा यही बताया गया है कि जमाअत अहमदिया नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबी तस्लीम नहीं करती और अपना नबी बनाया हुआ है परंतु आपके इमाम का ख़िताब सुनकर मुझे यक़ीन हो गया है कि आपकी जमाअत ही नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हक़ीक़ी जमाअत है।

और उन्होंने उसी वक़्त अपने हमराह पचासी लोगों के साथ अहमदियत क़बूल करने का ऐलान किया। जो मुख़ालिफ़ थे वे जलसा सुनके जमाअत में शामिल हो गए। अल्लाह करे कि पाकिस्तानी मौलवियों को भी अक़ल आए।

तनज़ानिया में एक गांव अबूओ के इमाम मस्जिद वर्णन करते हैं कि मैं एम.टी.ए पर जलसा सालाना के मुनाज़िर देखकर हैरान रह गया। यह मंज़र बहुत प्रभावित कुन था। बैअत के दौरान बहुत ही जज़बाती लमहात थे और मैं हैरान था कि हर कोई एक इमाम के पीछे शब्दो को दुहरा रहा था और फिर दुआ कर रहा था। इन मुनाज़िर ने मुझे मुकम्मल तौर पर बदल दिया और मुझ पर गहरा असर डाला। इं शा अल्लाह में ज़िंदगी-भर इस जमाअत का हिस्सा बना रहूँगा। मैं एक सुन्नी मस्जिद में इमाम था लेकिन अब मैं दिल से अहमदी हूँ और मुकम्मल तौर पर बदल चुका हूँ।

तब्लीग़ विभाग यू.के की रिपोर्ट यह है कि जलसा के दौरान यू.के से ताल्लुक़ रखने वाले बाईस लोगों को बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली।

उनमें दो ब्रिटिश हैं, दो नाएजेरियन हैं, ग्यारह पाकिस्तानी हैं, एक रूमानी है, पाँच अरब हैं और एक बंगाली। जलसा के अवसर पर तक़रीबन एक हज़ार के क़रीब ग़ैर अहमदी मेहमान शामिल हुए जलसा के दौरान मुख़्तलिफ़ तब्लीग़ी सेशंज़ का इनएक़ाद किया गया जिनमें सवाल-ओ-जवाब की मजालिस भी शामिल थीं और इस में मुख़्तलिफ़ लोगों ने अपने तास्सुरात भी दिए।

एम.टी.ए अफ़्रीक़ा के तहत चौदह से अधिक नैशनल टीवी चैनल्ज़ ने मेरे ख़ताबात नशर किए। आलमी बैअत की तक़रीब भी लाईव नशर की गई जिसे कई मिलियन लोगों ने देखा। अफ़्रीक़ा के जो नए चैनल शामिल हुए उनमें मलावी का नैशनल टीवी चैनल, बेनिन में कैनाल पुलिस टीवी चैनल, गेम्बया, घाना, योगाँडा, लाइबेरिया और सीरालियोन के हुकूमती चैनल्ज़ हैं। तक़रीबन तीस मिलियन से अधिक लोग इन चैनल्ज़ को देखते हैं।

चौदह मुख़्तलिफ़ टैलीविज़न के जर्नलिस्ट जलसा में शामिल हुए और सत्तावन रिपोर्टस नशर हुईं। इन रिपोर्टस की पहुंच पचपन मिलियन से अधिक लोगों तक है।

सेनेगाल में जलसा सुनने के लिए मिशन हाऊस में इंतेज़ाम किया गया। एक इमाम जो कॉलेज में क़ुरआन-ओ-हदीस और फ़िक़्ह के लेक्चरर हैं वह जलसा ख़त्म होने के बाद कहने लगे कि मैं आज अपने आपको ख़ुशनसीब तसव्वुर कर रहा हूँ क्योंकि आज मुझे इमाम महदी के ख़लीफ़ा को बराह-ए-रास्त देखने और उनका ख़िताब सुनने का अवसर मिला। मुझे इस से पहले जमाअत अहमदिया के हवाले से बहुत संदेह थे कि अहमदी नऊज़ो-बिल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में कमी करते हैं लेकिन आज की ख़लीफ़तुल मसीह की तक़रीर सुनकर मेरे इस बारे में समस्त संदेह दूर हो गए हैं और आज की तक़रीर सुनकर मैं बरमला कह सकता हूँ कि जमाअत अहमदिया नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करने वाली नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से बेपनाह इख़लास-ओ-मुहब्बत करने वाली है और सारी दुनिया को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत और फ़रमांबर्दारी करने का दरस देता है।

ऑनलाइन के बारे में यह रिपोर्ट है कि पिछले वर्ष उनकी संख्या इकतालीस थी इस साल उनचास वैबसाईटस हुईं जिनको पढ़ने वालों की संख्या पंद्रह मिलियन बताई जाती है। प्रिंट कवरेज मज़ामीन की संख्या चौदह है। इन अख़बारात के पाठकों की संख्या पाँच मिलियन बताई जाती है। मुख़्तलिफ़ टीवी चैनल्ज़ के माध्यम से उन्नीस ख़बरें प्रसारित हुईं। देखने वालों की संख्या दस मिलियन बताई जाती है और मुख़्तलिफ़ रेडीयो स्टेशनज़ पर कुल चौबीस ख़बरें प्रसारित हुईं उनको सुनने वालों की संख्या भी दस मिलियन है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अंदाज़न छयालीस मिलियन से अधिक लोगों ने जलसा सालाना की ख़बर देखी और सुनी।

और अगले चंद दिनों में कहते हैं कि मज़ीद कवरेज की भी तवक़्क़ो है और काफ़ी बड़े बड़े रेडीयो चैनल्ज़ एल्बी सी, बी-बी सी रेडीयो Solent बी-बी सी साउथ टूडे और डेली ऐक्सप्रैस इत्यादि विभिन्न लोगों ने ख़बरें प्रकाशित कीं।

इसी तरह नुमाइश से भी बहुत सारे लोग। मैं ने वर्णन भी किया था मख़ज़न-ए-तसावीर की नुमाइश है, हिस्ट्री देख के, दूसरी नुमाइशें देख के लोग बड़े प्रभावित हुए हैं। यह सब नुमाइशें भी तब्लीग़ का एक माध्यम बनी हैं।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जहां जलसा अपनों के लिए तर्बीयत और रूहानियत में तरक़्क़ी का माध्यम बना है वहां ग़ैरों को भी इस्लाम की तालीम के समझने और उन्हें ख़ुदा तआला के क़रीब लाने का माध्यम बना है। अतः उसके लिए जहां हमें अल्लाह तआला के आगे मज़ीद झुकना चाहिए, उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए वहां इस अह्द पर भी क़ायम रहना चाहिए कि हम हमेशा अल्लाह तआला के पैग़ाम को, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को पहुंचाने के लिए पहले से बढ़कर कोशिश करते रहेंगे। अल्लाह तआला उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

हमारी जमाअत का यह कर्तव्य होना चाहिए कि यदि कोई हदीस उल्ट और विपरीत क़ुरआन और सुन्नत के न हो तो चाहे कैसे ही अदना दर्जा की हदीस हो उस पर वह अमल करें

एक मुस्लमान औरत की प्रत्येक मुशरिक, प्रत्येक काफ़िर और प्रत्येक अहल-ए-किताब मर्द से शादी की मनाही का स्पष्ट आदेश क़ुरआन-ए-करीम में है

आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके बाद आपके खलीफ़ा ने कभी किसी औरत को मर्दों की ईमामत का पद निर्धारित नहीं फ़रमाया अतः यदि किसी जगह पर मर्द और औरतें दोनों हों तो नमाज़ का ईमाम मर्द ही होगा।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 30)

प्रश्न : एक अरब मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में फ़िक़्ह हनफ़ी के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इरशाद पेश करके अपने बारे में लिखा है कि मैं फ़िक़्ह हनफ़ी को ज़्यादा एहमियत नहीं देता क्योंकि मैं भी क़ियास के ख़िलाफ़ हूँ। तथा दरयाफ़त किया कि क्या मैं फ़िक़्ह ज़ाहिरिया पर अमल कर सकता हूँ, क्योंकि फ़िक़्ह ज़ाहिरया ने क़ुरआन और हदीस की ग्रंथों के ज़ाहिर पर अमल करने के बारे में बहुत ज़बरदस्त नज़रिया पेश किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 21 दिसंबर 2020 में इस बारे निम्नलिखित हिदायात फ़रमाई :

उत्तर : आपने अपने पत्र में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जिस इरशाद का वर्णन किया है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस में इस ज़माने के दो फ़रीक़ों के क़ुरआन और हदीस के बारे में इफ़रात-ओ-तफ़रीत पर मुश्तमिल नज़रियात का रद्द फ़र्मा कर क़ुरआन और हदीस का हक़ीक़ी स्थान वर्णन करते हुए अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई है कि हदीस चाहे कैसे ही अदना दर्जा की हो जब तक वह क़ुरआन-ए-करीम और सुन्नत से खिलाफ़ न हो उसे इन्सानी फ़िक़्ह पर तर्जीह दी जाएगी। और फ़िक़्ह की बुनियाद क़ुरआन-ए-करीम, सुन्नत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हदीस नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर होनी चाहिए लेकिन यदि किसी मसला का हल इन तीनों से न मिल सके तो फिर फ़िक़्ह हनफ़ी के अनुसार अमल कर लिया जाए। और यदि ज़मानी तग़य्युरात की वजह से फ़िक़्ह हनफ़ी से भी कोई सही राहनुमाई न मिले तो ऐसी सूरत में अहमदी उल्मा इस मसला के बारे में इजतिहाद करें। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हमारी जमाअत का यह कर्तव्य होना चाहिए कि यदि कोई हदीस मुआरिज़ और मुख़ालिफ़ क़ुरआन और सुन्नत न हो तो चाहे कैसे ही अदना दर्जा की हदीस हो इस पर वह अमल करें और इन्सान की बनाई हुई फ़िक़्ह पर इसको तर्जीह दें। और यदि हदीस में कोई मसला न मिले और सुन्नत में और न क़ुरआन में मिल सके तो इस सूरत में फ़िक़्ह हनफ़ी पर अमल कर लें क्योंकि इस फ़िर्क़ा की कसरत ख़ुदा के इरादा पर दलालत करती है और यदि कुछ मौजूदा तग़य्युरात की वजह से फ़िक़्ह हनफ़ी कोई सही फ़तवा न दे सके तो इस सूरत में उल्मा इस सिलसिला के अपने ख़ुदादाद इजतेहाद से काम लें लेकिन होशयार रहें कि मौलवी अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु चकड़ालवी की तरह बेवजह अहादीस से इंकार न करें हाँ जहां क़ुरआन और सुन्नत से किसी हदीस को मुआरिज़ पावें तो इस हदीस को छोड़ दें।"

(रिव्यू बरमुबाहसा बटालवी-व-चकड़ालवी, रुहानी खज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 212)

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इन नसाएह पर पूरी तरह कारबन्द है और जब भी किसी मसला में इजतेहाद की आवश्यकता पड़ती है तो जमाअत के उल्मा ख़िलाफ़त अहमदिया के ज़ेर-ए-साया इस मसला पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करके इजतेहाद के तरीक़ को इख़तेयार करते हैं।

किसी अहमदी के क़यास को नापसंद करना और इस बिना पर फ़िक़्ह हनफ़ी को बुरा ख़्याल करना दरुस्त नहीं। इल्म वाले और मुज्तहेदीन का जायज़ हदूद में रह कर क़ुरआन और सुन्नत और हदीस से इस्तिंबात करके क़ियास के तरीक़ को अपनाना मना नहीं क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्शादात में क़ियास के हक़ में कई दलायल मौजूद हैं। तथा ख़ुलफ़ाए राशिदीन ने भी अपने अह्द मुबारक में क़ियास से काम लिया और कई नए पेश आमदा को आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना के किसी मसला पर क़ियास कर के हल फ़रमाया।

इसी तरह क़यास के हवाले से जिन लोगों ने हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को अहले राए कह कर तान की है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे पसंद नहीं फ़रमाया। इसलिए एक अवसर पर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब की इसी किस्म की ग़लती पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें सम्बोधित कर के हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के स्थान को वर्णन करते हुए फ़रमाया "हे हज़रत मौलवी-साहब आप नाराज़ न हों आप साहिबों को इमाम बुज़ुर्ग अबूहनीफ़ा से यदि एक ज़र्रा भी हुस्न-ए-ज़न होता तो आप इस क़दर सुबकी और इस्तिख़फ़ाफ़ के शब्द प्रयोग न करते आपको इमाम साहिब की शान मालूम नहीं। वह एक बड़ा समुद्र था और दूसरे सब उसकी शाख़ें हैं उसका नाम अहले राए रखना एक भारी ख़ियानत है इमाम बुज़ुर्ग हज़रत अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को इलावा कमालात इलम आसार नब्वीह के क़ुरआन से मसायाल का हल निकालने में लंबा हाथ था ख़ुदा तआला हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी पर रहमत करे उन्होंने पृष्ठ 307 में फ़रमाया है कि इमाम-ए-आज़म साहिब की आने वाले मसीह के साथ इस्तख़राज मसायल क़ुरआन में एक अध्यात्मिक मुनासबत है।"

(अल् हक़ मुबाहिसा लुधियाना, रुहानी खज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 101)

जहां तक फ़िक़्ह ज़ाहेरिया का ताल्लुक़ है तो इस बारे में अहम बात यह है कि क़ुरआन-ए-करीम हदीस नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में वर्णन कई अहकामात ऐसे हैं कि यदि उनके केवल ज़ाहेरी शब्द को अपनाया जाए तो इस हुक्म की रूह और हिक्मत को इन्सान पा ही नहीं सकता। अतः प्रत्येक अहमदी का कर्तव्यहै कि वह इसी तरीक़ को इख़तेयार करे जिसकी निशानदेही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार अवतरित होने वाले आपके ग़ुलाम सादिक़ और इस ज़माने के हक़म-ओ-अदल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से राहनुमाई

पा कर फरमाई है और जिसका वर्णन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्द में ऊपर कर दिया गया है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अल् अज़हर यूनीवर्सिटी की एक ओहदेदार महिला का फ़तवा कि "क़ुरआन-ए-करीम में कोई एसेंस नहीं जो मुस्लमान लड़की को ग़ैर मुस्लिम के साथ शादी से मना करती हो" के बारे में राहनुमाई चाही। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 21 दिसंबर 2020 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : इस्लामी तालीमात की बुनियाद क़ुरआन-ए-करीम के इलावा इस्लाम के संस्थापक हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत और क़ुरआन-ओ-सुन्नत से मुवाफ़िक़त रखने अहादीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर है। इस लिए अल्लाह तआला ने जहां क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन अहकामात की पैरवी का मुस्लमानों को हुक्म दिया वहां यह भी फ़रमाया है कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۔ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۔ (आले ईमरान : 32 से 33) अर्थात् (हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तू कह कि (हे लोगो यदि तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबा करो (इस सूरत में वह (भी) तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे क़सूर तुम्हें बख़श देगा और अल्लाह बहुत बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है। तू कह (कि) तुम अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करो (इस पर यदि वह मुँह फेर लें तो (याद) रखो कि अल्लाह काफ़िरों से कदापि मुहब्बत नहीं करता।

इसी तरह फ़रमाया : فرمایاوَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (अल् हशर : 8) कि यह रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे ले लो और जिस से मना करे उस से रुक जाओ और अल्लाह का संयम धारण करो। अल्लाह का अज़ाब निसंदेह बहुत सख़्त होता है।

इन बुनियादी उसूलों को जानने के बाद जब हम मुस्लमान औरत की किसी ग़ैर मुस्लिम मर्द से शादी के मुआमला पर ग़ौर करते हैं तो हमें एक मुस्लमान औरत की प्रत्येक मुशरिक, प्रत्येक काफ़िर और प्रत्येक अहल-ए-किताब मर्द से शादी की मुमानअत का वाज़ेह हुक्म क़ुरआन-ए-करीम में मिलता है।

इसलिए अल्लाह तआला सूरः आयत 222 में हुक्म देता है कि मुशरिकों से जब तक कि वह ईमान न ले आएं अपनी औरतें न बयाहो और सूरत अल् मायद आयत 6 में जहां मुस्लमानों के लिए अहले किताब का और अहले किताब के लिए मुस्लमानों का खाना जायज़ क़रार दिया वहां मुस्लमान मर्दों को अहले किताब औरतों से निकाह की तो आज्ञा दी लेकिन मुस्लमान औरतों के अहले किताब मर्दों से निकाह का वर्णन नहीं फ़र्मा कर इस बात की मुमानअत को क़ायम फ़रमाया। और सूरत अल् मुंतहेना की आयत 11 में हिज्रत कर के आने वाली मुस्लमान औरतों को कुफ़्फ़ार की तरफ़ न लौटाने और उन औरतों को कुफ़्फ़ार के लिए और कुफ़्फ़ार को इन मुस्लमान औरतों के लिए जायज़ न होने की हिदायत फ़र्मा कर कुफ़्फ़ार से भी मुस्लमान औरतों को ब्याहने की मुमानअत फ़र्मा दी।

इन क़ुरआन के अहकामात के इलावा आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत और आपके इर्शादात से कहीं साबित नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी किसी अज़ीज़ा को किसी ग़ैर मुस्लिम से ब्याहा हो या उन क़ुरआन के अहकामात के नुज़ूल के बाद सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद या हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद पर अपनी किसी बच्ची को किसी ग़ैर मुस्लिम से ब्याहा हो बल्कि उसके विपरीत हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा को आम नसीहत फ़रमाई कि जब तुम्हारे ज़ेर कफ़ालत किसी मुस्लमान महिला का रिश्ता कोई ऐसा व्यक्ति तलब करे जिसका दीन और अख़लाक़ तुम्हें पसंद हो तो उस महिला को उस से ब्याह दो, ख़ाह उस व्यक्ति में कोई नुक़्स हो। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दीन और अख़लाक़ वाले इस फ़िक़रा को तीन दफ़ा दुहराया।

(सुंन तिरमिज़ी, किताब अल् निकाह)

इस ज़माने के हक़म-ओ-अदल और हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आक़ा-ओ-मुता की पैरवी में इसी इस्लामी तालीम के ठीक अनुसार अपने अनुयाइयों को नसीहत फ़रमाई कि "ग़ैर अहमदियों की लड़की ले लेने में हर्ज नहीं है क्योंकि अहल-ए-किताब औरतों से भी तो निकाह जायज़ है बल्कि इस में तो लाभ है कि एक और इन्सान हिदायत पाता है। अपनी लड़की किसी ग़ैर अहमदी को नहीं देनी चाहिए। यदि मिले तो ले बेशक लो। लेने में हर्ज नहीं और देने में गुनाह है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 5, पृष्ठ 525 मुद्रित 2003 ई.)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सूरत अल् मायद में वर्णन क़ुरआन के आदेश तहत ही ग़ैर अहमदी मर्द को अपनी लड़की देना गुनाह क़रार दिया है क्योंकि इस आयत में मुस्लमान मर्दों के लिए अहल-ए-किताब की औरतों से निकाह के जवाज़ का तो वर्णन किया गया है लेकिन मुस्लमान औरतों को अहल-ए-किताब मर्दों से ब्याहने का कोई वर्णन नहीं किया गया।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि क़ुरआन-ए-करीम के 30 पारे होने में क्या ख़ुदाई हिक्मत हो सकती है? हुज़ूर अनवरअय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 10 जनवरी 2021 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम को आयात और सूरतों की शक्ल में नाज़िल फ़रमाया आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा तआला की तरफ़ से अता होने वाली राहनुमाई से इस की मौजूदा तर्तीब को क़ायम फ़रमाया। जहां तक क़ुरआन-ए-करीम को मनाज़िल, पारों और रुकुआत् में तक़सीम करने का मुआमला है तो यह बाद में लोगों ने क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने की सहूलत के पेश-ए-नज़र विभिन्न वक़्तों में ऐसा किया। इसीलिए क़ुरआन-ए-करीम के क़दीम नुस्ख़ाजात में ऐसी कोई तक़सीम मौजूद नहीं है।

अहादीस में आता है कि कुछ ऐसे सहाबा जो अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की बजाए केवल नफ़ली इबादात में ही व्यस्त रहते थे, उनके बारे में पूछने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें जो नसाएह फ़रमाएं उनमें सारे क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत के भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दिनों की हदबंदी फ़रमाई थी।

इसलिए हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अम्र बिन आस के बारे में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि पूरे महीना में क़ुरआन-ए-मजीद ख़त्म किया करो। उन्होंने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह मैं इस से ज़्यादा की ताक़त रखता हूँ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया बीस दिनों में पढ़ लिया करो। उन्हों अर्ज़ किया मैं इस से भी ज़्यादा की ताक़त रखता हूँ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दस दिनों में ख़त्म कर लिया करो। उन्होंने अर्ज़ क्या मैं इस से भी ज़्यादा की ताक़त रखता हूँ तो फ़रमाया : फिर सात दिनों में मुकम्मल कर लिया करो और इस से ज़्यादा अपने आपको मशक़्क़त में मत डालो क्योंकि तेरी पत्नी का भी तुझ पर हक़ है और तेरे मेहमान का भी तुझ पर हक़ है और तेरे जिस्म का भी तुझ पर हक़ है। (सही मुस्लिम, किताब अल् सियाम)

कुछ का ख़्याल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इरशाद की रोशनी में बाद में लोगों ने अपनी सहूलत के लिए क़ुरआन-ए-करीम को तीस पारों और सात मनाज़िल में तक़सीम कियाता कि ज़्यादा से ज़्यादा एक महीना में और कम से कम सात दिनों में क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत मुकम्मल करने वाले के लिए आसानी पैदा हो सके। कुछ लोगों का ख़्याल है कि बच्चों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने के लिए विद्यार्थियों और अध्यापकों की सहूलत के लिए मध्य के युग में क़ुरआन-ए-करीम को मनाज़िल और पारों में तक़सीम किया गया। और यह तक़सीम किसी विषय के एतबार से नहीं बल्कि

क़ुरआन-ए-करीम के हुजम के लिहाज़ से की गई है।

क़ुरआन-ए-करीम की रुकुओं में तक़सीम के बारे में कहा जाता है कि यह काम हुज्जाज बिन यूसुफ़ के ज़माने में हुआ और कुछ रिवायात के अनुसार यह तक़सीम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाई थी। तथा यह कि नमाज़ों की रकात में एक विशेष हिस्स क़ुरआन की तिलावत की सहूलत पैदा करने के लिए रुकुओं की यह तक़सीम की गई।

बहरहाल जो भी हो, यह बात प्रमाणित है कि क़ुरआन-ए-करीम की यह तक़सीम अल्लाह तआला की तरफ़ से नहीं है और न ही हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वर्णन फ़र्मूदा है, बल्कि बाद के ज़मानों की तक़सीम है। इसीलिए अरब और ग़ैर अरब दुनिया के विभिन्न इलाक़ों में प्रकाशित होने वाले क़ुरआन-ए-करीम के नुस्ख़ा जात में कुछ पारों की तक़सीम में अंतर भी पाया जाता है। जबकि इस बात में किसी शक-ओ-शुबा की गुंजाइश नहीं कि इस तक़सीम से न तो क़ुरआन-ए-करीम के मुतालिब समझने में कोई अंतर पड़ता है और न ही क़ुरआन-ए-करीम की सदाक़त और हक़्क़ानियत पर कोई हर्फ़ आता है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में सूरः अल् हाक़ की एक आयत के शब्द "اُذُنٌ" के बारे में तहरीर करके राहनुमाई चाही कि क्या उस से मुराद रिकार्डिंग मशीन है क्योंकि कान तो किसी बात को महफ़ूज़ नहीं रखते बल्कि दिल-ओ-दिमाग़ महफ़ूज़ रखते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 10 जनवरी 2021मैं इस बारे में निम्नलिखित राहनुमाई फ़रमाई :

उत्तर : हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तफ़सीर-ए-सग़ीर में अल् हाक़ की इस आयत का अनुवाद इस तरह किया है "ताकि इस (घटना) को तुम्हारे लिए एक निशान क़रार दें और सुनने वाले कान सुनें (और दिल उसे याद रखें)"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने इस तशरीही अनुवाद में इस बात को वाज़ेह फ़र्मा दिया है कि कानों का काम केवल सुनना है याद रखने का काम या दिल करता है या दिमाग़ करता है। इस लिए सूरः अल् बक़रः की तफ़सीर वर्णन करते हुए एक जगह हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कान और आँख के फंक्शन की वज़ाहत में एक अत्यन्त लतीफ़ नुक्ता वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं "जब हम कोई आवाज़ सुनते हैं तो उसके ये अर्थ होते हैं कि यह आवाज़ बाहर से हो कर आई है। क्योंकि कान का पर्दा क़ुदरती तौर पर इस तरह बनाया गया है कि हवा का ज़ोर कान के पर्दा पर पड़ता है तो इस से एक हरकत पैदा होती है। इर्तिआश की लहरें अर्थात् वाईब्रेशन (vibrations) पैदा होती हैं और यही वाईबरेशनज़ दिमाग़ में जाती हैं और दिमाग़ उनको शब्द में बदल डालता है। यही वाई बरेशन हैं जो रेडियो के वालवज़ में पड़ती हैं और रेडियो उनको शब्द में बदल डालता है। इन्सानी बनावट में रेडियो कान है और आसाब दिमाग़ी वालवज़ हैं। उनके माध्यम से जो हरकात दिमाग़ में मुंतक़िल होती हैं वह वहां से आवाज़ बन कर सुनाई देती हैं .. और जो कुछ तुम देखते हो वे भी हरकात हैं, जिनको आँखें शक्ल में तबदील कर डालती हैं। जो चीज़ तुम्हारे सामने गड़ी होती है वह तस्वीर नहीं होती बल्कि वए फ़ीचरज़ (features) अर्थात् नक़्श होते हैं जो आँखों के माध्यम से दिमाग़ में जाते हैं और वे उन्हें तस्वीर में बदल डालता है। यही वजह है कि आजकल रेडियो सीट के माध्यम से तस्वीरें भी बाहर जाने लग पड़ी हैं।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 2, पृष्ठ 403)

अतः हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की इस लतीफ़ तफ़सीर की रोशनी में मेरे नज़दीक सूरः इलहा की ऊपर वर्णित आयत में एक काबिल-ए-ज़िक्र निशान के याद रखने को कान की तरफ़ इसलिए मंसूब किया गया है कि कान के माध्यम से ही आवाज़ दिल-ओ-दिमाग़ तक पहुंच कर महफ़ूज़ होती है। बाक़ी इस आयत क़ुरआन में शब्द कान से रिकार्डिंग मशीन मुराद लेना आपकी एक ज़ौक़ी तशरीह है, जो यदि क़ुरआन-ओ-सुन्नत और अहादीस के ख़िलाफ़ नहीं तो इस तशरीह में कोई हर्ज की बात नहीं।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि यदि घर में मर्दों के होते हुए केवल औरत इस काबिल हो कि नमाज़ पढ़ा सके तो क्या वह नमाज़ पढ़ा सकती है। और यदि नहीं तो क्यों नहीं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 16 जनवरी 2021 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : इस्लामी तालीम की यह ख़ूबी है कि इस में मर्दों और औरतों के हुक़ूक़-ओ-फ़रायज़ उनके स्वभाव के अनुसार अलग-अलग निर्धारित किए गए हैं। इस लिए नमाज़ बाजमाअत भी केवल मर्दों पर फ़र्ज की गई और औरतों को इस से रुख़स्त दी गई और औरतों का बाजमाअत नमाज़ अदा करना महज़ नफ़ली हैसियत क़रार दिया गया है। इसलिए मर्दों की मौजूदगी में कोई औरत नमाज़ बाजमाअत में उनकी इमाम नहीं हो सकती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके बाद आपके खलिफ़ा ने कभी किसी औरत को मर्दों की इमामत का मन्सब तफ़वीज़ नहीं फ़रमाया। इस ज़माने के हक़म-ओ-अदल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी जब बाज़-औक़ात किसी बिमारी की वजह से घर पर नमाज़ अदा फ़रमाते तो नमाज़ की इमामत ख़ुद कराते और हुज़ूर अलैहिस्सलाम को चूँकि खड़े होने से चक्कर आ जाया करता था इसलिए हज़रत अम्मां जान रज़ियल्लाहु अन्हा को पीछे खड़ा करने की बजाय मजबूरन अपने साथ खड़ा कर लेते थे।

अतः यदि किसी जगह पर मर्द और औरतें दोनों हों तो नमाज़ का इमाम मर्द ही होगा क्योंकि जो मर्द नमाज़ पढ़ने की योग्यता रखता है और उस की अपनी नमाज़ सही हो जाती है तो उस की इमामत में दूसरों की नमाज़ भी सही होगी।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी ए लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 11 मार्च 2021)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 05 September 2024 Issue No. 36

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

पृष्ठ 1 का शेष भाग

दिया है जिसके अर्थ ये हैं कि वह कामिल तौर पर लोगों की दुआओं को सुनता और उनकी ज़रूरतों को पूरा फ़रमाता है। अर्थात दूरी और समय का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अब अगर कोई व्यक्ति ख़ुदा तआला से दुआ करने की बजाय मर्दों की क़ब्रों पर जाता और उन से अपनी मुरादें मांगता है तो वह शिर्क का इर्तिकाब करता है क्योंकि उसने ख़ुदा तआला के अल् समीअ होने में मुरदों कोभी शरीक कर लिया, हालाँकि क़ुरआन-ए-करीम उसकी खुल कर खंडन करता है और फ़रमाता है कि

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ف اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ج وَمَا يَشْعُرُوْنَ لا اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ۔

(अल् नहल : रुकु 2) अर्थात अल्लाह तआला के सिवा जिन झूठे उपासकों लोग अपनी मदद के लिए पुकारते हैं वे कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि इस से बढ़कर यह बात है कि वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं और वे सब के सब मुर्दा हैं न कि ज़िंदा। और वे ये भी नहीं जानते कि वे कब दुबारा उठाए जाऐंगे। इस आयत में अल्लाह तआला ने मुशरिकों के इस ख़्याल का खंडन फ़रमाया है कि हमारे माबूद भी दिलों के भेद जानते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारा यह दावा बिल् कुल ग़लत है। जो ख़ालिक़ हो वही अपनी मख़लूक़ की अंदरूनी ताक़तों और उसकी ज़रूरियात से आगाह हो सकता है परंतु जिनको तुम पुकारते हो वह तो ख़ुद सब के सब मख़लूक़ हैं उन्होंने तुम्हारे हालात को क्या जानना है। और फिर वह मुर्दा हैं ज़िंदा नहीं उन्होंने तुम्हारी मदद क्या करनी है। उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि वह कब उठाए जाऐंगे गोया उनका अंजाम भी दूसरों के हाथ में है। ऐसी सूरत में अगर कोई शख़्स किसी क़ब्र पर जाता और मुर्दा को किसी तसर्रुफ़ के लिए कहता है तो वह शिर्क का इर्तिकाब करता है। इसी तरह बुतों, दरियाओं, समुंद्रों और सूरज और चांद इत्यादि से मुरादें माँगना और दुआएं करना भी शिर्क में ही शामिल है।

नोवा शिर्क की नौवीं किसम यह है कि ऐसे आमाल जो मुशरिकाना रसूम का निशान हैं गो अब शिर्क की मुशाबहत नहीं रखते उनका बिना ज़रूरत-ए-तिब्बी इर्तिकाब किया जाए उदाहरणतः कोई शख़्स किसी क़ब्र पर दिया जला कर रख आए तो ख़ाह वे साहिब क़ब्र से दुआ करे या न करे या साहब-ए-क़ब्र को ख़ुदा समझे या न समझे यह फ़ेअल भी शिर्क के अंदर आ जाएगा क्योंकि यह अमल पहले ज़माना के मुशरिकाना आमाल का बक़ीया है। वे लोग ख़्याल करते थे कि मुर्दे क़ब्रों पर वापस आते हैं और जिन लोगों की निसबत मालूम करते हैं कि उन्होंने उनकी क़ब्रों का एहतराम किया है उनकी मदद करते और उनके कामों को तकमील तक पहुंचा देते हैं। इसीलिए लोग क़ब्रों पर दिए या फूल इत्यादि रख आते थे। उन यादगारों को ताज़ा रखना भी चूँकि शिर्क की मदद करना है इसलिए यह भी शिर्क में ही दाख़िल है इसी तरह दरख़्तों पर रसियाँ इत्यादि बांधनी या क़ब्रों पर चढ़ावे चिढ़ाने और टोने करने सब इसी क़िस्म में शामिल हैं। मैंने जो यह कहा है कि बला ज़रूरत तिब्बी ऐसे काम करने मना हैं इस से मुराद यह है कि अगर कोई शख़्स कहीं जा रहा हो और रास्ता में रात आ जाए और मजबूरन किसी मक़बरा में ठहरना पड़े तो यह ज़रूरी नहीं कि वहां इन्सान अंधेरे में ही बैठा रहे बल्कि अगर दिया जला कर रोशनी का इंतेज़ाम करले तो यह जायज़ होगा।

दसवीं शिर्क की दसवीं किसम यह है कि चाहे अमल न हो परंतु दिल में मुहब्बत, अदब, भय और आशा के जज़बात और लोगों के विषय में ख़ुदा तआला से ज़्यादा उसके बराबर रखे जाएं।

कामिल मुवह्हिद वही है जो शिर्क की इन समस्त अक़साम से बच्चे और अल्लाह तआला की अहदीयत पर सच्चे दिल से ईमान लाए। हक़ यह है कि शिर्क इन्सान का नुक़्ता-ए-निगह बहुत ही महिदूद कर देता है और इस की हिम्मत को गिरा देता है और इस के उद्देश्य को अदना कर देता है। मुशरिक इन्सान यह ख़्याल करता है कि वह बराह-ए-रास्त ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता और उसे किसी वास्ता की ज़रूरत है हालाँकि अल्लाह तआला ने अपने और इन्सानों के दरमयान कोई वास्ता नहीं रखा और सब इन्सानों के लिए इस ने अपने क़ुरब के दरवाज़े खुले रखे हैं जो चाहे उन में दाख़िल हो जाए। बे-शक एक दुनयवी बादशाह के लिए सब रियाया से संबंध रखना संभव नहीं होता परंतु ख़ुदा तआला की ताक़तें महिदूद नहीं हैं। उस की ताक़त और क़ुदरत में यह बात दाख़िल है कि वह सबसे बराह-ए-रस्त ताल्लुक़ रखे और उन्हें अपने क़ुरब में जगह दे।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 44 प्रकाशन कादियान 2010)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad